हिन्दी प्रचार पुस्तक-माला, पुष्प-

विमोचन

मद्यपान-निषेध के प्रचार के लिये
श्री. चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य से
संपादित विमोचन नामक तमिल मासिक पत्रिका से
चुने हुए लेखों का अनुवाद

प्रकाशक:

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,

मद्रास.

प्रथम संस्करण] १९३६ [मूल्य ०—८—०

प्रस्तावना

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारीजी की जैसी कहानियां और लेखों का अनुवाद इस संग्रह में प्रकाशित हो रहा है, इस तरह की कहानियां समय समय पर अंग्रेज़ी में भी प्रकाशित होती रही हैं। श्री राजाजी की ये कहानियां बहुत रोचक और काम की होती हैं। इन कहानियों का हमारे देहाती जीवन से अधिक सम्बंध है। यही कारण है कि इन कहानियोंमें देहात में रहनेवालों की रुचि के अनुकूल ग्राम-जीवन का ही चित्रण है। श्री राजाजी की लेखनशैली विषय के अनुकूल और वर्णन स्वाभाविक है। उनका ढंग हृदयग्राही है जिससे इन कहानियों और लेखोंमें निहित सन्देश आसानीसे पाठकों के पास पहुंच जाते हैं।

मैं इस हिन्दी अनुवाद का भी अधिकांश पढ़ गया हूँ। इसकी भाषा स्पष्ट और आसानीसे समझ में आ जानेवाली है। इस अनुवाद द्वारा हिन्दी के पाठक भी श्री राजाजी की लेखन-शैली का आनन्द प्राप्त कर सकेंगे और साथ ही इससे लाभ भी उठावेंगे। प्रकाशकों का यह प्रयत्न प्रशंसा के योग्य है। इस पुस्तक का हिन्दी के पाठकों में जितना अधिक प्रचार हो अच्छा है।

पटना
८—२—३६.

राजेन्द्र प्रसाद

विषय - सूची।

विमोचन

[मद्य-बहिष्कार आन्दोलन के लिये श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी से सम्पादित 'विमोचन' नामक तमिल मासिक पत्र के कुछ चुने हुए लेखों का हिन्दी अनुवाद ।]

जय-भेरी बजाओ !

(गीत)

बजाओ जय की भेरी आज !
चौंक कर गान्धी की आभा से,
जाग कर मदिरा - निद्रा से,
मुक्त हो निर्धनता - दुख से,
मद्य - दानव को पीसें आज ! बजाओ—

शराब की शैतानी ।

तन तोड़ कर धन कमाने वाले ग़रीबों के धन का नाश कराने वाली दो चीज़ें—मदिरा और शराब हैं । ये दोनों शरीर को किसी तरह का लाभ नहीं पहुँचातीं । बेहोशी को दवा, और नशे को श्रम-निवारण का साधन समझना निरी मूर्खता है । शराब पीकर थकावट दूर करने की इच्छा करना कर्ज लिये हुए धन को अपनी सम्पत्ति मानने के बराबर है । मद्यपान शारीरिक बल और बुद्धि का नाश करता है । उससे कई रोग पैदा होते हैं । उस अवस्था में दवाओं का भी असर नहीं होता । जिसे शराब पीने का थोड़ा सा भी चसका लग जाता है उसे वह भूत पिशाचों की तरह सदा के लिये अपना गुलाम बना लेता है । फिर पीना छोड़ने की इच्छा करने पर भी उस विषैली आदत से अपने को बचाना असम्भव हो जाता है । क्योंकि एक बार पीने की आदत पड़ जाने पर मन स्थिर नहीं रहता ।

हमारे देश की सभी धार्मिक पुस्तकों में शराब, जुआ, व्यभिचार, चोरी आदि दुष्कर्मों की निंदा कर लोगों को उससे बचने की चेतावनी दी गयी है । कोई पीता भी हो तो माँ-बाप, भाई—बहिन आदि से छिप कर ही पिया करता है । अपनी आदत को बुरा जान कर भी पियक्कड़ लोग दूसरों की आंख बचा कर ही छिपे छिपे पिया करते हैं ।

और देशों में और हमारे देश में यही अंतर है । सभ्यता और विद्या-प्रचार में बढ़े हुए पाश्चात्य देशों में लोग शराब और मदिरा को अन्य खाद्य वस्तुओं के साथ रखते हैं । वे स्त्री और बालबच्चों के सामने बिना किसी संकोच के पीते हैं । • वहां शराब आदि का पीना बुरा नहीं

माना जाता। उनके ख्याल में हद्द से ज्यादा पीना ही बुरा है जब तक मस्ती न आ जावे तब तक पीना बुरा नहीं समझते।

हमारे देश की जो ऊपर बड़ाई की गयी है, वह यद्यपि सच है, तो भी यदि हम शराब की दूकानों को बंद कराने का शीघ्र ही प्रयत्न न करेंगे तो थोड़े ही दिनों में हमारी हालत बुरी हो जायगी। मदिरा आदि नशे की वस्तुएं हमारे भी घरों में घुस कर अपना पैर जमा लेंगी और सभी के सामने बिना किसी संकोच के पीने योग्य आदरणीय बन जायंगी। जैसे आजकल छोटे बड़े सभी होटलों में जा कर खा-पी लेते हैं, वैसे ही शराब की दूकानों में भी जा कर पीने लग जायंगे। ये दूकानें भी लोगों को लुभाने के लिये भड़कीली रोशनी और तसबीरों से सजी होंगी। इन बातों के चिन्ह अभी से दीखने लगे हैं।

आजकल शराब पीने के पक्ष में छोटे बड़ों में जो विचार उठ रहे हैं उनके मिटने से पहिले ही मदिरा-पान को रोकना आवश्यक है।

पाश्चात्य देशों के विज्ञानवेत्ता और समाज-सुधारक नशे से होने वाली खराबियों को समझ कर उसको रोकने का प्रयत्न कर रहे हैं। अमेरिका में तो शराब आदि का एकदम बहिष्कार कर के उसके विरुद्ध कानून बना दिया गया है। यूरोप और अमेरिका के स्त्री पुरुष पढ़े-लिखे हैं। मज़दूर लोग भी किताबें पढ़ा करते हैं। इसलिये उन देशों में किसी बात का प्रचार आसानी से किया जा सकता है। किन्तु हमारे देश के करोड़ों भाइयों के लिये तो काला अक्षर भैंस बराबर है। यदि उनको पीने की आदत पड़ जायगी तो फिर उनका उद्धार करना एकदम असम्भव हो जायगा। हमारी जाति ही का अधःपतन हो जायगा।

हमारे देश के कई समाज अब मदिरा शराब आदि को छूते तक नहीं हैं। किन्तु गरीबों का इसमें कितना धन खर्च होता है?

देश का इस में हर साल ७० करोड़ रुपया खर्च हो जाता है जिसमें सरकार का अंश २५ करोड़ है। मद्रास-प्रान्त में साल भर में २० कराड़ रुपये लगते हैं जिसमें से ६ करोड़ सरकार को मिलता है। मद्रास सरकार को ज़मीन से ७ करोड़, शराब से ६ करोड़ और धनिकों के इनकम टैक्स से २ करोड़ से भी कम की आमदनी है।

दक्षिण भारत में प्रति दिन सिर्फ़ शराब में ५ लाख रुपये खर्च होते हैं। यदि शराब का बहिष्कार किया जाय तो ये रुपये बच जायँगे और खूनखराबी, डाका, चोरी, बदचलनी, दरिद्रता, रोग आदि अपराध आधे से ज्यादा कम हो जायंगे। सब उद्योग धन्धे बढ़ जायंगे, गरीबों के घर में पैसे बचेंगे और किसी पर कर्ज़ का बोझा नहीं रहेगा। सभी के काम ठीक ठीक चलेंगे।

भला कोई कुआँ खोद कर उसके पास अपने बच्चों को खेलने के लिये भेजता है? अगर भेजे तो बच्चा कुएं में गिर कर मर जाय। इसी तरह शहरों और गांवों में जगह जगह शराब की दूकानें खोल कर जनता को पीने से मना करने से कोई लाभ न होगा।

जनता को भारी नुकसान पहुंचा कर उसमें से कुछ आमदनी कर लेना किसी भी राज्य के लिये भला नहीं। जिस चीज़ से देश को हानि पहुँचे उस चीज को बिलकुल रोकना ही उचित है।

सरकार की तरफ़ से खुली हुई दूकानें यदि बंद हो जायँ तो इससे कुछ तकलीफ़ भले ही हो लेकिन लोगों का चोरी छिपे पीना बंद हो जायगा। पुराने पियक्कड हों तोभी नये पियक्कडों की उत्पत्ति न होगी।

इसलिये हमारा कर्तव्य है कि जैसे अमेरिका में कानून बन गया है, वैसे ही हमारे देश में भी शराब आदि को एकदम बंद करने के लिये कानून बनाने का खूब आंदोलन किया जाय।

इंगलैण्ड की युद्ध, चोरी, बीमारी और अकाल इन सब से जितनी हानि हुई है उससे ज्यादा शराब की दूकानों से हुई है ।

(विलियम ग्लैडस्टन इंगलैण्ड का प्रसिद्ध मन्त्री)

शराब पीने के समान दूसरा कोई पाप ही हममें नहीं है। कौन नहीं जानता है कि शराब का मँगाना और उसका व्यापार करना एकदम रोक दिये जायँ तो सारी प्रजा शारीरिक और मानसिक सुख पावेगी !

(मिलटन, प्रसिद्ध अंग्रेज़-महाकवि)

*　　*　　*

बुद्ध भगवान ने अपने संघ के पांच नियमों में मद्य-पान निषेध को आवश्यक [illegible]या है। महाराज अशोक के समय में समस्त देश प्रायः सुरापान से मुक्त था ।

*　　*　　*

जैन-धर्म के आचार्यों ने ग्रहस्थियों के आठ मुख्य गुण बताये हैं, वहां शराब का त्याग सब से प्रथम बताया है जैसा कि नीचे के श्लोक से विदित होता है ।

मद्य मांस मधु त्यागैः सहाणुव्रतपंचकम् ।
अष्टौ मुख्य गुणानाहु गृहिणां श्रमणोत्तमाः ॥

माधव को ज्ञान हुआ।

रामू और उसके चचेरे भाई माधो के घरों के बीच में एक ही दीवार थी। रोज़ शाम को चिराग जलने के पहले ही माधो के दरवाज़े पर उसके दोस्त सोमनाथ और विट्ठल हाज़िर हो जाते थे।

सोमू—भाई माधो!

माधो—क्या आ गये?

विट्ठल—हां, आओ, चलें।

माधो—जरा बैठो, और एक गज़ बुन लेने दो।

सोमू—तुम तो रोज़ इसी तरह कहा करते हो। अरे, बुनना तो भाग्य में बदा ही है। आओ चलें।

माधो बुनाई बन्द कर बाहर चला आता, और फिर तीनों मिल कर बाहर चले जाते।

उनकी इन बातों को रोज़ रामू अपने करघे पर बैठा २ सुनता। उन लोगों के उस गली से निकल जाने पर वह अपनी बेटी वल्ली को बुला कर कहता—"वल्ली, अपनी डिब्बी को ले आ।"

वल्ली कातने के काम में लगी रहती। वह तुरंत जाकर डिब्बी को लाकर रामू के सामने रख देती। डिब्बी पीले कपड़े में लिपटी रहती। रामू उसे धीरे से खोल कर उसमें ४ आने डाल देता "माधो आज भी ४ आने ताडी वाले को देगा" कह कर फिर डिब्बी को बांध वल्ली से कहता—"इसे ले जा कर रख दे।"

दूसरे दिन भी यही बातें होतीं । "भाई, आओ चलें" कह कर सोमू दरवाज़े पर आ खड़ा होता और माधव को बुलाता ।

माधो अपना काम बन्दकर अपने दोस्तों के साथ हो लेता । रामू अपनी बेटी वल्ली को बुलाता । वल्ली डिब्बी लाकर उसके सामने रख देती । रोज़ की तरह रामू उसमें ४ आने डाल देता और वल्ली फिर उसे उठा

कर रख देती । उधर माधो भी अपनी आदत के माफ़िक ताड़ी की दूकान में जाकर ४ आने पैसे देता और ताड़ी लेकर आंख मूंद पी जाता ।

इसी तरह दिन बीतते जाते थे । रामू की डिब्बी पैसे से भरती जाती थी । माधो की कमाई के पैसे रोज़ ४ आने के हिसाब से ताड़ी की दूकान पर पहुँच जाते थे । उधर माधो पछताता कि वह ४ आने से ज्यादा ताड़ी पर खर्च कर नहीं कर पाता ! इधर वल्ली अपनी डिब्बी को पैसे से भरा देख खूब खुश होती ।

माधो की प्यारी वस्तु ताड़ी उसके पेट में अपना काम करने लगी । सुबह उठते ही उसका सिर दर्द करने लगता । आंखें लाल होती जाती थीं । वह हमेशा शराबी की तरह बकता रहता । घर में अपनी मां और स्त्री से हर हमेशा झगड़ता । बाज़ार से ज़रूरी चीज़ें खरीदने के लिये तंगी हमेशा बनी रहती थी ।

इसतरह बारह महीने बीत गये । एक दिन सुबह को माधो की बूढ़ी मां घर का आंगन साफ़ कर द्वार पर झाड़ू दे रही थी । रामू कहीं से एक सुन्दर गाय को लिये हुए आया । गाय का छोटा बछड़ा अपनी मां के चारों तरफ़ उछल रहा था ।

द्वार पर से रामू ने अपनी स्त्री को पुकारा। रामू की चाची ने उस से पूछा—"गाय किसकी है?"
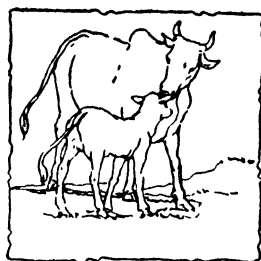
रामू बोला—"कल गोविन्दपुर की हाट में गया था। वहीं से इसे खरीदे ला रहा हूं।"

बुढ़िया बोली—"अच्छा! ऐसी बात है? तुम बड़े भाग्यवान हो! तुम्हें किस चीज़ की कमी है? हमीं को गरीबी सता रही है।

रामू ने बुढ़िया से पूछा—"ऐसा क्यों कहती हो माँ?"। फिर अपनी स्त्री के हाथ में रस्सी पकड़ा दी।

बुढ़िया कहने लगी—"तुम भी करघे पर काम करके कमा रहे हो। मेरे लड़के को भी उतनी ही मज़दूरी मिलती है। पर उसके सब पैसे न जाने कहां बिला जाते हैं? हमेशा के लिये दरिद्रता ने हमारे यहां अपना अड्डा जमा लिया है। तुम्हारी यह गाय वहुत वढ़िया है। इसे कितने में खरीद लाये भैया?"।

वह बोली—"७० रुपये में? हाँ, ठीक है। अब इससे कम दाम में अच्छी गाय नहीं मिलती।"

रामू—"यह बल्ली की डिब्बी के पैसे हैं। उस में २० रुपये और हैं, जिससे मंगल की हाट में जाकर गाय के लिये भूसा और खली लाने का विचार कर रहा हूँ।"

बुढ़िया—"बल्ली की डिब्बी में इतने रुपये कहाँ से आये?"

रामू—"माधो रोज़ जो पैसा ताड़ी पीने में फूंकता था उतना ही मैं रोज़ बल्ली की डिब्बी में डाल देता था। उसी पैसे से यह गाय खरीद सका हूँ।"

किस्सा यहीं पूरा नहीं हुआ, छः महीने और बीते। बूढ़िया के सब तरह से समझाने पर भी माधो ने ताडी पीना नहीं छोड़ा। वह यही कहता कि उसकी कमाई के पैसे को खर्च करने से उसे रोकने का किसी को क्या हक़ है? इसके लिये कभी २ वह बुढ़िया को मारता भी।

एक बार गांव में एक तरह का बुखार फैला। रामू को भी ज्वर आ गया। उसने सोंठ मिर्च का काढ़ा ही पिया, और इसी से वह दस दिन में चंगा हो गया। फिर उसने करघे पर अपना काम भी शुरू कर दिया। माधो को भी उसी समय बुखार आया था। दस बारह दिन बीते, पर वह चारपाई से उठ नहीं सका। रुपये पैसे की तंगी ने घर को और भी तवाह कर दिया।

बुढ़िया रामू की स्त्री कनकलता से आकर कहती—"रामू तो दस दिन में अच्छा हो गया। क्या बात है बहू, माधो का बुखार अबतक नहीं उतरा?"

वह कहती—"सब भगवान की मर्जी।"

बुढ़िया—"न जाने वे ही भगवान हमारी तरफ़ कब आँख खोल कर देखेंगे?"

रामू बोला—"बात असल में और है।"

कनकलता—"और कुछ नहीं, सब नसीब की बात है।"

रामू—"तुम को मालूम नहीं है। कल जो सूई से दवा भरने वाले (इनजेकशन देनेवाले) बड़े डाक्टर आये थे वे कहते थे कि शराब पीनेवाले लोगों पर दवा जल्दी असर नहीं करती और ताड़ी शरीर के तमाम खून को बिगाड़ देती है।"

कनकलता—"यह सब फिजूल की बातें हैं। नसीब सब के ऊपर है?"

किसी तरह एक महीना बीता । माधो कुछ अच्छा हुआ पर उससे काम नहीं होता था ।

एक रोज़, सबेरे रामू चबूतरे पर दातून करने बैठा था । माधो भी धीरे धीरे आकर उसके पास बैठ गया । वह बोला—"भाई, मैं ताड़ी छोड़ देने का विचार कर रहा हूं ।"

रामू—"इससे बढ़ कर तुम्हारी भलाई के लिये दुनियां में और कुछ हो नहीं सकता ।"

माधो—"अभी मंदिर जाकर भगवान के सामने क़सम खाता हूं । मैं भी तुम्हारी तरह डिब्बी में पैसे डालूंगा । गाय तुम्हीं क्यों रखो? क्या हमारे घर में दूध, मक्खन नहीं पचेगा?"

रामू—"वैसा ही करो भाई । आज अमावस है । मैं भी मन्दिर चलता हूँ । भगवान को नमस्कार कर मैं भी नारियल बतासे चढ़ाऊंगा; चलो ।"

फत्तू की फ़तह।

फ़त्तू ने दूकानवाले से कहा—"डालो भाई और एक गिलास!"

दूकानवाला तो उधर फ़त्तू के गिलास में शराब डालता गया और इधर फ़त्तू कहता गया कि डालो भाई एक गिलास और! देखें आज कौन मेरा क्या करता है? अजी, मेरा कोई क्या कर सकेगा, तुम्हीं क्या कर लोगे? आज देखो तो ज़रा हम क्या करते हैं! साले कहते हैं, शराब नहीं पीना चाहिये; शराब की दूकानें बंद कर देनी चाहियें! और इनकी होगी आज मीटिंग! वाह! वाह! देखो तो ज़रा इन्हें। यों कहते कहते अपनी बगल से आठ अंगुल का एक लम्बा छुरा दिखाते हुए बोला कि जो साला मुझे शराब की दूकान में जाने से रोकेगा उसकी छाती में इसी को भोंक दूंगा।

थोड़ी देर चुप रह कर फिर कहने लगा—दूकान तो भाई, सरकार-बादशाह की रखी हुई है। मुझे वहाँ जाने से रोकनेवाले ये साले होते कौन हैं? क्या सरकार नहीं रही? यहाँ क्या किसी की पूछ नहीं होती?

दूकान वाले ने पूछा कि क्या तू उस सभा में जायगा?

फ़त्तू ने कुछ जवाब नहीं दिया। शराब पीकर गला साफ़ करते हुए कुछ देर बाद बोला—हां जायंगे। जायंगे क्यों नहीं? क्या मुझे वहां नहीं जाने देंगे वे साले?

दुकान वाला बोला—जाने क्यों नहीं देंगे। उसमें तो सब लोग जा सकते हैं। यह देख नोटिस में भी तो यही लिखा है। तू जा कर सब से पहली बेंच पर बैठ जाना। कोई तुझे वहां से हटाना भी चाहे, तो हटना मत।

"ठीक तो है"—कहता हुआ फत्तू मूंछों पर ताव देने लगा ।

कलाल ने कहा देख, वहां जाकर पूछना कि क्यों नहीं पीना चाहिये ? आप लोग क्या चाय काफ़ी सोड़ा वगैरह नहीं पीते ?

हां ! हां ! वे क्या चाय काफ़ी वगैरह नहीं पीते ? ज़रूर पूछूंगा भाई, ज़रूर पूछूँगा । मुझे जवाब देकर ही वे आगे कुछ कह सकेंगे ।

कलवार ने फिर कहा कि उनसे पूछना कि क्या वे रेल, मोटर, ट्राम वगैरह पर नहीं चढ़ते ? यह सब उन बदमाश लीडरों की चाल हैं ।

फ़त्तू ने कहा, उन साले पिकटरों से सब पूछूँगा भाई, सब पूछूंगा । और आधा गिलास डालो तो । आजकल तो साले शराब में भी पानी मिला देते हैं । बड़े बेईमान हैं, भाई, सब बेईमान हैं ! कहां तो पहले एक गिलास से ही दिल खुश हो जाता था और कहां अब दो गिलास से भी मन नहीं भरता । अच्छा भाई, ये सभा करानेवाले हैं कौन ? कहां रहते हैं ये साले ? उनका क्या धन्धा है ?

दूकानवाला :—उनका धन्धा क्या होगा ? यही [illegible]क करना ही उनका धन्धा है ।

फ़त्तू :—क्यों बड़े होशियार हैं क्या वे ?

दूकानवाला :—हां, हां, तुझे धोखे में डाल देंगे ।

फ़त्तू :—कौन ? मुझे ? धोखे में डालेंगे वे ? अरे चलो जी, यह सब नहीं होने का ।

दो गिलास शराब और चढ़ा कर फ़त्तू सभा में गया । वहां जाकर वह सबसे आगे एक कुर्सी पर बैठ गया । किसी ने आकर उसे वहां से उठने को कहा । पर फत्तू वहां से तिल भर भी न हिला और न कुछ बोला । उसे देख कर सब हँसने लगे ।

सभा शुरू हुई। सब लोग ताली बजाने लगे। फत्तू भी ताली बजाने लगा। उसके आस पास बैठे हुए लोग उसके मुँह से निकलने वाली दुर्गंध से ही उसे पियक्कड़ जान कर उससे दूर हटने लगे। वक्ता ने धीरे धीरे अपना व्याख्यान शुरू किया।

फ़त्तू आप ही आप कहने लगा, अरे यह हमारी ही तरह हमारी ही बातों में धीरे धीरे बोलता है। शायद यह नहीं, कोई दूसरा होगा। जब पीनेवालों को यह गाली देने लगें तब देखा जायगा।' यों कहता हुआ बगल में छिपे हुए अपने छुरे पर हाथ फेरने लगा और वक्ता की बातें सुनता गया। वक्ता एक कहानी कहने लगे। फ़त्तू ने पहले तो यह समझा कि वक्ता अपने ही बचपन की बातों को यहां दोहरा रहा है पर धीरे २ उसको ऐसा मालूम होने लगा कि वक्ता फत्तू के ही जीवन का चित्र खीच रहा है। और उसे वक्ता की कहानी अपनी स्त्री के साथ बिताये हुए अपने आनंदमय दिनों का वर्णन सा जान पड़ा।

फिर फत्तू को मालूम हुआ कि वक्ता उसी की बुरी आदतों का वर्णन कर रहा है। छुरे पर से अपना हाथ हटा कर वह अपनी आंखें पोंछने लगा। वक्ता की सारी बांतें फ़त्तू को अपने विषय में बहुत ठीक २ मालूम हुईं। जहां वक्ता की बातों से सभा के और लोग हँस पड़ते, वहां फ़त्तू की आंखों में आँसू भर आते थे।

वह अपने को रोक न सका। एकाएक उठ कर बोल उठा। 'सरकार!'

वक्ता ने अपनी वक्तृता बंद कर बड़े प्रेम से पूछा"—क्यों भाई, क्या है?"

उसने कहा—"बाबू, आपकी सारी बातें सच हैं। मैं यहाँ आप पर इसी छुरे से वार करने आया था। लेकिन अब देखता हूं कि आप सब ठीक कह रहे हैं। मेरा ख्याल ग़लत था। मेरी आंखें खुल

गयीं। जब शराब की तमाम दूकानें एकदम उठा दी जायँ तभी हमारी भलाई होगी। यह सच है — महोदय! आप ही हमारे देवता हैं; गुरु हैं। मुझे माफ़ कीजिये। मेरी रक्षा कीजिये।" यों कहता हुआ फत्तू वक्ता के पैरों पर गिर पड़ा।

वक्ता ने फत्तू को उठा कर गले से लगाते हुए कहा—भाई! अब आगे इस ज़हर को कभी न छूने की प्रतिज्ञा करो।

फ़त्तूने कहा, सरकार! मेरी स्त्री के मरे छः साल हो गये। आप ने जैसे अभी कहा था, वैसे ही उसके पेट में बच्चा था। एक दिन जब मैं पीकर लौटा तो एक छोटी सी बात पर मुझे गुस्सा आया और मैंने उस बेचारी के पेट में ज़ोर से लात मारी। वह लात खाकर गिर कर मर गयी। हाय! उसकी हत्या मैंने ही की। यह बात कोई नहीं जानता। दूसरे ही दिन उसका दाह कर्म चुपचाप कर डाला। अब पूरे छः साल हो गये। हाय! मैं कितना बड़ा पापी हूं।

यों कह कर वह फिर वक्ता के पैरों पर गिर पड़ा और फूट फूट कर रोने लगा। वक्ता ने कहा—भाई, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। अब आगे कभी शराब न पीने की सौगंद खाकर अपनी रक्षा का सारा बोझ उसी ईश्वर पर डाल दो।

वक्ता ने उपस्थित जानता की ओर फिर कर कहा—भाइयो! पियक्कड़ों की यही हालत होती है। मन उन्हें जिधर खींचे—चाहे बुराई की ओर हो, चाहे भलाई की ओर—उधर ही उन्हें बेबस हो कर जाना पड़ता है। अपने मन पर उनका कोई वश नहीं रह जाता। वे सब कामों में जल्दी कर बैठते हैं। अब फ़त्तू को समझ आई है। ईश्वर उसे अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रख कर शराब की बुराइयों से बचायगा। आइये, हम सब लोग मिल कर भगवान का भजन करें।

सब लोग उच्च स्वर से गाने लगे—
"रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीता राम।"

फ़तू ने भी खूब जोर से कहा—
"रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीता राम।"

उधर कलाल फ़त्तू की इंतजारी करता बैठा ही रहा।

अमेरिका में मद्य-बहिष्कार के कारण कम से कम १९० करोड रुपयों का घाटा पड़ा। इस बात की लोगों को कोई चिन्ता नहीं। पहले जितना घाटा उन्हें हुआ उससे कई गुनी ज्यादा आमदनी अब उन्हें हो रही है।

बडे से बडा पियक्कड़ भी आरंभ में थोड़ा थोड़ा ही पिया करता था।

इस्लाम में शराब का बहिष्कार।

शराब पीना मुसलमानों के लिये भी भारी गुनाह है। हजरत मोहम्मद साहब ने मदिरा को धिक्कारा है। कुरान शरीफ में शराब के संबन्ध में लिखा है कि, "यस्अलुनका अनिल् खमरे बल्मसीरे कुल् फीहिमा इस्मुन् कबीरुन्।" अर्थात् ऐ पैगम्बर लोग जो तुमसे शराब के बारे में पूछते हैं, तो तुम उनसे कह दो कि इस में (शराब में) बडा गुनाह है। कुरान की उक्त आयत में लफ्ज 'खमर' शराब और 'इस्मुन्' शराब के लिये आया है।

* * *

एक बार एक ने हज़रत मुहम्मद साहब से पूछा कि ऐ रसूलिल्लाह! फरमाइये कि गुनहगार आदमी की क्या पहचान है तो हजरत ने और बहुतसी बातें बताने के अतिरिक्त जो सब से ज्यादा पापी आदमी बताया है, वह है—१. शराब बनानेवाला, २. शराब बेचनेवाला, ३. शराब खरीदनेवाला, ४. शराब के नशे से गुजर करनेवाला, ५. शराब पिलानेवाला और ६. पीनेवाला) ये लोग अत्यन्त पापी हैं जो कभी नहीं बख्शे (माफ किये) जायंगे।

शासन - पद्धति ।

मद्रास की प्रान्तीय सरकार की ओर से हाल ही में एक इश्तिहार निकला था। उसका सारांश नीचे दिया जाता है:—

"हमारे देश के गरीब लोग शराब मदिरा वगैरह पिया करते हैं। शराब में ५० सैकड़ा सुरासार (Alcohol- नशीली चीज़) और ताड़ी में ८ सैकड़ा होता है।

"यह 'सार' शरीर और नसों पर विष का काम करता है। शरीर को शक्ति देने वाली चीज़ प्राण-वायु है। सुरासार उस प्राण-वायु का हरण कर जीवन-शक्ति का नाश करता है। अतएव वह मनुष्य का आहार नहीं हो सकता।

"आहार वही चीज़ हो सकती है जिसमें निम्न-लिखित गुण हों:— (१) मेहनत करने से मनुष्य के शरीर का जो अंश क्षय हो जाता है उसे पूरा करे; (२) अगर शरीर में तुरन्त उसकी आवश्यकता न हो तो भी वह चरबी बन कर उचित स्थान में ठहर कर फिर समय पर काम आने वाली संचित शक्ति बने; (३) शरीर की गरमी को कम न होने दे।

"शराब में ऊपर्युक्त तीन गुणों में से एक भो गुण नहीं है। उसमें पोषण-शक्ति ज़रा भी नहीं है। आरंभ में सुरापान करने पर बदन गरम सा मालूम पडता है। किन्तु यह कोरा भ्रम है। सच तो यह है कि वह शरीर की गरमी को कम कर देता है। इस बात की परीक्षा लोगों को बहुत ही ठण्ढे पर्वतों के शिखरों पर ले जाकर उन्हें शराब पिला कर की गयी है। उस परीक्षा से यह बात साबित हुई है कि शराब से शरीर की गरमी कम होती है और कमज़ोरी बढ़ती है।

"पहले तो पियक्कड़ को कुछ उत्साह और मानसिक सुख मालूम होता है पर इसका कारण यह है कि पियक्कड़ का दिमाग़ ख़राब हो जाता है और उसमें अपने शरीर को काबू में रखने की ताकत नहीं रह जाती। इसका फल यह होता है कि जब उसे शान्ति से रहना चाहिये तब वह गाने और हल्ला मचाने लगता है; बिना कारण क्रोध करने लगता है। फिर धीरे धीरे पियक्कड़ अपनी इन्द्रियों को काबू में रखने की ताकत खो देता है। उसका शरीर कांपने लगता है। उसकी तमाम कार्रवाइयां बे-सिरपैर की होने लगती हैं। कुर्सी से उठने लगता है तो कुर्सी को नीचे गिरा देता है। वह मेज़ पर गिलास वग़ैरह जोर से पटकता है। ज्यादह पीने लगे तो उसकी बुद्धि और भी ख़राब हो जाती है। वह बेहोश हो जाता है और मनमाना बकने लगता है। उसकी आंखें लाल २ हो जाती हैं। साँस लेते हुए आवाज़ निकलती है। यह सब नशीली चीजों के शरीर की नसों पर आक्रमण करने के परिणाम हैं।

शराब रोगों का मूल है। वह शारीरिक सुख को नष्ट कर देती है। जब शरीर के सभी अंग अपने २ काम ठीक ठीक करते हैं तभी मनुष्य सुखी रहता है। इन अंगों में से एक या अधिक जब किसी कारण से अपने काम में ढीले पड़ जाते हैं तब बीमारी पैदा होती है। शरीर के सब से नरम अंग दिमाग़ और नसें हैं। शराब रक्त से मिल कर शीघ्र ही दिमाग़ को ख़राब कर डालती है। नसों को अपने काम करने में बाधा डालती है। ज्यों ज्यों पीने की आदत बढ़ती जाती है त्यों त्यों जठराशय, पित्ताशय और रक्त की नाड़ियों में रुधिर का प्रवाह कम पड़ता जाता है।

"शराब की बुराई तुरन्त ही नहीं मालूम पड़ती। वह कुछ दिनों बाद मालूम पड़ती है। पागल-खाने के रहने वालों में २५ सैकड़े ऐसे हैं जा शराव पीने के कारण ही पागल हो गये हैं।

"शराब पियक्कड़ों की जीवन-शक्ति का क्षय कर देती है। इससे उनकी संतान कमज़ोर होती है। रोग के कीटाणुओं का सामना करने की शक्ति उसमें नहीं रहती। इस तरह कुछ दिनों में जाति का ही पतन होने लगता है।

"शराब किसी महान् रोग से भी बढ़ कर भयंकर है। महान् रोगों के कारण कभी कभी कुछ लोगों की मृत्यु हो जाती है; किन्तु शराब सारी कौम को ही कमज़ोर बना देती है और मनुष्यों को ऐसा निर्बल कर देती है कि किसी भी बीमारी से वे नहीं बच सकते"।

शराब से होनेवाली बुराइयों का इस तरह लम्बा चौड़ा वर्णन करके भी सरकार उन दूकानों को बंद करने के लिये तैयार नहीं है। शराब की दूकानों को बंद कर के कानून बना देना चाहिये कि न कोई शराब खरीद सके, न कोई बेच सके। जो शख्स चोरी छिपे इसका व्यापार करे उसे कड़ी सजा दी जाय। यही शासन करने का सबसे अच्छा तरीका है।

वेतन बटवारे का दिन ।
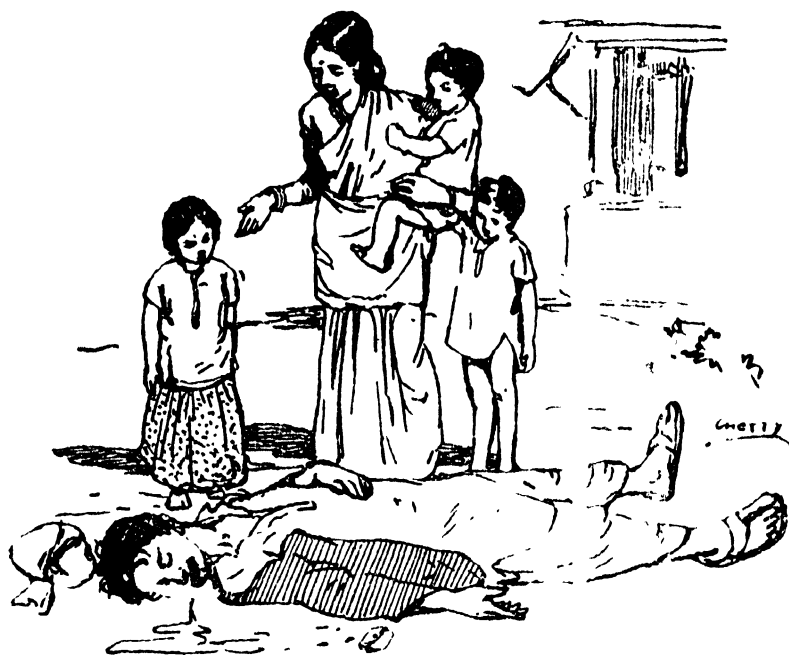
यह मज़दूर, मालिक से तनख्वाह लेकर सीधे अपने घर न आकर

शराब की दूकान पर गया था । देखिये, पीकर कैसा

बेहोश पड़ा है। इस की स्त्री और बच्चे जो इस

के रुपये लाने की बाट जोह रहे थे,

इसकी बुरी हालत को देख

चिन्ता में पड़े हैं ।

रेल वालों का मद्य-बहिष्कार ।

अमेरिका में मदिरा का, सरकार द्वारा कानून बना कर, पूर्ण बहिष्कार करने के पहले ही—सन् १९१९ ई०—में रेल में काम करने वालों ने उसके बहिष्कार का नियम बना लिया था। नियम यों था—

"रेल्वे के नौकर अपना काम करते हुए किसी तरह की नशैली चीज़ का इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे। यदि इस नियम के खिलाफ़ जो कोई ऐसी चीज़ का उपयोग करेगा या उनकी दूकानों में जायगा तो वह फ़ौरन काम से अलग कर दिया जायगा।"

एक रेल्वे कंपनी के मालिक से जब इस नियम का कारण पूछा गया तब उसने कहा कि करोड़ों रुपये खर्च कर रेल के मार्ग में पड़ने वाली आफ़तों को बतलानेवाले जो खम्भे वग़ैरह लगाये जाते हैं, वे एक ड्राम भर मदिरा के प्रभाव से निकम्मे बन जाते हैं। रेलवालों को अनुभव से मालूम हुआ है कि रेल में काम करनेवाला जरा भी शराब पिये तो उससे जान का ख़तरा और धन का भारी नुक़सान हो सकता है।

मद्य-बहिष्कार के पहले अमेरिका में एक रेल्वे ट्रेन पर इस तरह विपत्ति आयी थी :—इञ्जन चलानेवाले ने पहले रोज मदिरा पीली थी। गाड़ी के निकलते वक्त वह होश में मालूम होता था, और उसे देखने से यह नहीं जान पड़ता था कि उसने शराब पीली है। परन्तु रास्ते में खतरे का एक चिन्ह लगा हुआ था जिसे वह नशे की झोंक में नहीं देख सका। पहले दिन का उसका शराब पी लेना ही इसका कारण था।

ह्युको शूल्स नामक भौतिक विज्ञान वेत्ता ने इस संबन्ध में कई तरह से जांच की है। उसने यह नतीजा निकाला है कि मदिरा पीने से लाल और हरे रंग की भिन्नता का ज्ञान नहीं रहता। इससे भी हरे

रंग की अपेक्षा खतरा सूचक लाल रंग ही को पहचानने में उन्हें ज्यादा तक़लीफ़ होती है।

लगभग पाव भर बिअर (जौ की शराब) में नशा बहुत ही थोड़ा होता है। तो भी जब इसे पिला कर परीक्षा की गयी कि पीने वाले हरे और लाल रंग का भेद पहचानते हैं या नहीं तब मालूम हुआ कि इसके पीनेवालों में सौ पीछे ४४ आदमियों की दृष्टि कमजोर साबित हुई; इनमें १८ लोगों की दृष्टि तो बहुत ही कमजोर हो गयी थी। इससे यह सिद्ध हुआ कि जरा सा सुरासार (नशा) भी आंखों को खराब करने के लिये काफ़ी है। इञ्जन और मोटर वगैरह चलाने वालों में यह कमजोरी आ जाय तो उसका परिणाम बड़ा भयंकर होगा। इनको क्या पानी में, क्या कुहरे में, क्या धुएँ में और क्या धूप में, खतरे के चिन्हों को पलभर में पहचान कर अपनी गाड़ियां चलानी पड़ती हैं। इनकी जरा सी भी दृष्टि की भूल से भारी नुक़सान हो सकता है। अगर यह कहा जाय कि शराब से सौ में सौओं की दृष्टि तो खराब नहीं हुई, तो इसका यही जवाब है कि १८ सैकड़े ही बड़े से बड़ा नुक़सान कराने के लिये काफ़ी है।

मद्य-बहिष्कार से होने वाले लाभों को रेल्वे वालों ने खूब अच्छी तरह समझ लिया है। योरप में मद्य-बहिष्कार की ऐसी कई सभाएं हैं जिनमें सिर्फ़ रेल्वे के कर्मचारी शामिल हैं। अमेरिका में इञ्जन-ड्राइवरों का एक संघ है। इस संघ के नियमों में एक मुख्य नियम यह भी है कि इसके सदस्यों को कभी मदिरा छूनी भी नहीं चाहिये। कर्मचारियों ने अपने आप जो इस तरह का नियम बनाया, वारनस्टेन नामक उस संघ के प्रधान ने उसका कारण यों बतलाया है—

"आजकल रेलें बड़ी तेज़ चलती हैं। इसलिये यह बहुत ही आवश्यक है कि रेल चलाने वाले अपना दिमाग़ ठीक रखें। शराब पीकर दिमाग़ खराब करने का परिणाम बड़ा भयंकर होगा। तेज चलने

वाली ट्रेनों के ड्राईवरों को हर मिनिट तीन दफ़े ख़तरे के चिन्हों को देख कर और उनका मतलब अच्छी तरह समझ कर अपनी गाड़ियां चलानी पड़ती हैं। गाड़ी का सुरक्षित पहुँचना या उसका टूटना उन्हीं पर निर्भर है। पलभर के लिये भी ड्राइवर का दिमाग़ ठीक न रहे तो गाडी के टूटने का भय रहता है। मदिरा अक्ल को ख़राब कर सुस्त बना देती है। इसी कारण हमारे नियमों के विरुद्ध चलने वालों को हम अपने संघ से निकाल देते हैं। सन् १९१८ ई. में इञ्जन चलाने वालों की एक महासभा हुई थी। उसमें ९०२ प्रतिनिधि आये थे। उसमें मदिरा का पूर्ण बहिष्कार कर इस के विरुद्ध कानून बनाने का प्रस्ताव सर्व संमति से पास हुआ"।

एक पहेली।
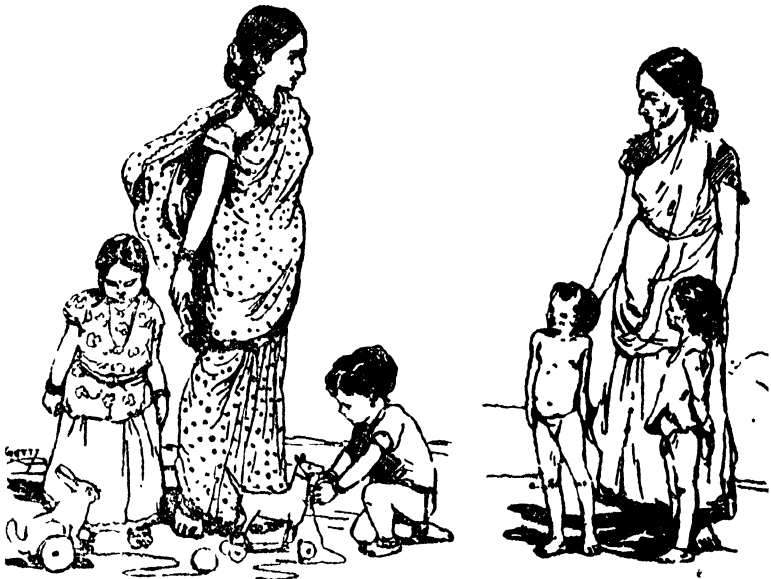
इस चित्र में एक तो मदिरा बेचने वाले का कुटुम्ब है, दूसरा मदिरा पीने वाले का है। क्या आप बता सकते हैं—

कौन किसका कुटुम्ब है?

बुद्ध जातक की कहानी।

महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का हाल 'बुद्ध जातक' में दिया हुआ है। उसमें शराब के संबंध में एक कथा है।

नशे की चीज़ों का इस्तेमाल करना बहुत बुरा है। उससे कई हानियाँ होती हैं। भले आदमी इस बात को अच्छी तरह समझकर शराबखोरी की आदत से बचे रहते हैं। वे दूसरों को भी मद्यपान करने से मना करते हैं। यह बात नीचे की कथा से साफ़ मालूम हो जायगी।

बोधि-सत्त्व एक बार देवताओं के राजा होकर इन्द्र के आसन पर विराजमान थे। अपनी स्वाभाविक करुणा के कारण वे निर्मल चित्त से सब जीवों की भलाई करते थे। उनमें दया, नम्रता आदि अच्छे अच्छे गुण मौजूद थे। इन्द्र पद के योग्य सब भोगों को भोगते रहने पर भी सारे लोक की भलाई करने का विचार उनके मन से कभी दूर नहीं हुआ।

साधारण आदमी ज़रा सा धन पाकर भी अपने को भूल जाता है। किन्तु बोधि-सत्त्व इन्द्र-भोग भोगते हुए भी जीवों की भलाई करना कभी नहीं भूले।

एक दिन परमात्मा ने मृत्यु लोक पर अपनी दृष्टि डाली। उनकी नज़र सर्वमित्र नामक एक राजा पर पड़ी। यह राजा बुरे मित्रों के साथ रह कर मदिरा पीने लग गया था। राजा को देख कर प्रजा भी शराब में डूबी रहती थी। बोधि-सत्त्व ने देखा कि अज्ञान वश राजा मदिरा पीने की हानियाँ नहीं समझता। वे मन ही मन चिन्तित हुए और कहने लगे कि हाय! इन बेचारों पर कैसी आफ़त आ पड़ी है।

मदिरा आरम्भ में तो पीनेवालों को मिठास का अनुभव कराती है और फिर उन्हें मोक्ष-मार्ग में जाने से रोकती है। अब इन लोगों की रक्षा करने का कौन सा उपाय हैं? मुझे क्या करना चाहिये?

"अपने नेता का अनुकरण करना मनुष्यों का स्वभाव है। इस-लिये मुझे पहले इस राजा की यह बुरी आदत छुड़ा देनी चाहिये। लोगों की भलाई या बुराई इसीसे होती है।"

यों विचार कर परमात्मा ने एक ब्राह्मण का वेष धारण कर लिया। उनका शरीर सुवर्ण-प्रतिमा सा बन गया था। सिर पर जटाएँ लटक रही थीं। वे पेड़ की छाल और मृगचर्म पहने हुए थे। इस तरह गंभीरता धारण कर वे अपने बायें हाथ में मद्य का एक लोटा लिये हुए सर्वमित्र की सभा में जा पहुँचे और बीच अधर में खड़े हो गये। उस समय सर्वमित्र और उसके साथी मदिरा पीकर पियक्कड़ों की तरह बातें कर रहे थे। एकाएक बीच आकाश में एक दिव्यमूर्ति को देख कर वे चकित हुए। उसे देख वे सब हाथ जोड़ खड़े हो गये। तब वह मूर्ति मेघ की गर्जना के समान गंभीर शब्द में बोली:—

'इस पात्र को देखो'। यह एक वस्तु से भरा हुआ है। फूल और सुकुमार पात्र इस बर्तन की शोभा बढ़ा रहे हैं। यह बड़ा विचित्र पात्र है। अब तुममें से इसको कौन मोल लेगा?

यह सुन राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने हाथ जोड़ कर अदब से कहा कि महात्मन्! बाल सूर्य का सा तो आपका तेज है, आपकी करुणा पूर्णचंद्र की चांदनी सी है और देखने में आप महर्षि से दीखते हैं। आप कृपा कर बतलाइये कि आप कौन हैं?

"मैं कौन हूँ"

बोधि-सत्त्व ने कहा कि यह तो पीछे से आप लोगों को मालूम होगा कि मैं कौन हूं, पहले आप इस पात्र को मुझ से लेने की बात

कीजिये। जो इस लोक में और परलोक में होने वाली कठिनाइयों का सामना कर सके वही इसे लेवे।

सर्वमित्र—मैंने इस तरह किसी को कोई वस्तु बेचते कभी नहीं देखा। जो कोई किसी वस्तु को बेचना चाहे तो वह उसकी बुराइयों को तो छिपाता है और उसकी बड़ाई का ही वर्णन करता है। हे महात्मन्! आप अब यह बतलाइये कि उस बरतन में है क्या? आप उसका क्या मूल्य लेंगे?

बोधि-सत्त्व—महाराज! सुनिये, इस बरतन में बरसात का पानी नहीं है, पवित्र तीर्थों का जल नहीं है, पुष्पों से संचित मधु नहीं है, उत्तम घी नहीं है। रजतमय चंद्र-किरणों का सा सफ़ेद दूध भी नहीं है। इस बरतन में शैतान शराब है। अब इसकी बड़ाई सुनो।

इसको पीनेवाला मस्त होकर अपने आपको भूल जायगा। बराबर ज़मीन पर भी ठोकर खाकर गिर पड़ेगा। अच्छे और बुरे आहार का भेद नहीं जान सकेगा। जो कुछ मिलेगा खा लेगा। इस बर्तन में जो वस्तु है, उसकी बड़ी महिमा है। अब बोलो, तुममें से इसे कौन लेने को तैयार है?

यह मद्य उसकी (लेनेवाले की) बुद्धि का नाश करेगा। इसके नशे में तुम जानवरों के समान बरताव करने लग जाओगे। तुम्हारे शत्रु तुम को देख कर हँसेंगे। बड़ी २ सभाओं में आप निर्लज्ज होकर नाचेंगे। ऐसे गुणवाले इस पात्र को कोई तुरन्त खरीद ले।

स्वभाव से संकोची आदमी भी इसे पीकर बेशरम बन जाता है। उसे शरीर ढकने का भी भान नहीं रहता। लोगों के सामने खुली जगहों में भी वह नंगा फिरने लगता।

और भी सुनो, इसका पान करनेवाले बीच सड़क पर पड़े बेहोश होकर सोया करते हैं। आप ही कै करके उसी पर लोटेंगे।

कुत्ते उनका मुँह चाटेंगे। इन परमोत्तम गुणों से अलंकृत वस्तु, मदिरा, इस पात्र में है।

अगर कोई स्त्री इसे पीये तो अपने मा बाप को भी पेड़ में बांध कर मारने का उसमें साहस आ जायगा। वह अपने पति का भी अपमान करेगी। यादवों ने इसे पी कर ही अपने बंधुओं का ख्याल न कर एक दूसरे का सर्वनाश किया। कितने ही बड़े बड़े घराने शराबखोरी के कारण मिट्टी में मिल गये।

इस सुरा के कारण ही कितने देवता अपनी पदवी खो कर समुद्र में जा छिपे। इस बरतन में जो भूत है वह झूठी बातों को सच्ची सी कहलाता है। लोग इसी के वश हो कर बुरे काम कर बैठते हैं और उसमें बड़ा आनंद पाते हैं।

पीनेवाले में यह बेहोशी पैदा करता है, बुराइयों का मूल स्थान है, दुःखों की जड़ है, पापों की माता है और ज्ञान को छिपानेवाला भयंकर अंधकार है। इसका सेवन करनेवाला अपने निर्दोष मा-बाप की और अपने भाई-बंधुओं की हत्या कर बैठता है। हे राजा, ऐसी शराब को तुम अवश्य लो।

उस मूर्ति की ये बातें सुनकर राजा की आंखें खुल गयीं और मद्य-पान की बुराइयाँ उसे मालूम हो गयीं और तब से उसने शराब न पीने की शपथ ले ली।

दुराचार पर कर।

सन् १७४३ ई. में विलायत की हाउस आफ़ लार्ड्स नामक अमीरों की सभा में सरकारी आमदनी के सम्बन्ध में बहस हुई थी। तब लार्ड चेस्टरफ़ील्ड ने यों कहा था :—

सभासदो! सुख-भोग की सामग्रियों पर कर लगाना चाहिये और बुराइयों को दूर करनेवाला कानून बनाना चाहिये। यही क़ायदा है। कानूनों का प्रयोग करना कठिन समझकर चुप रह जाना ठीक नहीं है। क्या आप पाप पर कर लगावेंगे? महात्मा ईसा मसीह की दस आज्ञाओं का उल्लंघन करनेवालों पर कर लगा कर आमदनी की राह निकालेंगे? क्या इस तरह का कर निंदनीय नहीं होगा? क्या उसका यह अर्थ न होगा कि जो लोग कर देने की शक्ति रखते हैं वे जी खोल कर पाप करें? अमीरो! दुराचार कुछ ऐसी चीज़ नहीं है कि उस पर कर लगाया जाय। उसका तो समूल नाश ही कर देना चाहिये। सुख भोग की इच्छा भी बेहद बढ़ जाय तो वह दुराचार में परिणत हो जाता है। इसलिये उस पर कर लगा कर उसे काबू में रखना उचित है। किन्तु प्रकृति से ही जो कृत्य बुरे हैं उनका तो नाश ही करना चाहिये। क्या आपने कभी सुना है कि किसी भी देश में चोरी या व्यभिचार पर कर लगाया गया है? कर लगाने का मतलब यह है कि जब तक उस वस्तु पर लगाया हुआ कर ठीक ठीक अदा होता जाय तब तक लोग उस वस्तु का अज़ादी के साथ उपयोग कर सकते हैं। मद्यपान तो सभी दशाओं में हर तरह से बुरा है। इसलिये उसका उपयोग दण्डनीय है। उस पर कर लगाना उचित नहीं है।

अभी कुछ लोगों ने अपने व्याख्यान में कहा था कि बहुत से लोग शराब बनाने के काम में लगे हुए हैं और उनमें कई तरह की कार्य-

कुशलताएं हैं । इसलिये इस व्यवसाय में रुकावट नहीं डालनी चाहिये । अमीरो! यह बात सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ । ये कारीगर जो चीज़ पैदा करते हैं वह शरीर को कमज़ोर बना देती है; गुण और कुल का नाश करती है और बुद्धि को मंद कर देती है । 'ऐसी चीज़ को तैयार करनेवाले कई हैं' यह भी क्या कोई दलील है? चोरों की संख्या अधिक होने से क्या चोरी का निषेध करनेवाला कानून उठा दिया जाय? ऐसी बात भी आपने कहीं सुनी है? अगर मनुष्यों की बुद्धि को बिगाडनेवाली चीज़ के बनानेवाले इतने अधिक हों तो भी सोचिये कि हमारा क्या कर्तव्य है? क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं है कि सत्यानाश हो जाने से पहले ही हम इस बुराई को एकदम बंद कर दें? अमीरो! शराब बनानेवालों की निपुणता की बड़ाई की जाती है । लेकिन स्वादिष्ट विष को पैदा करनेवाला व्यक्ति कैसा भी होशियार क्यों हो न वह मनुष्य-समाज के लिये कभी उपयोगी नहीं हो सकता । मेरा तो यही विश्वास है । क्या कोई यह कहने का साहस कर सकता है कि हत्यारे ने खूब मेहनत कर अपनी कला में उन्नति की है—इसलिये उसे माफ़ कर देना चाहिये? अमीरो! यदि इन लोगों की बनायी शराब बढ़िया से बढ़िया हो तो भी आइये, हम उसका तुरंत नाश कर दें ताकि जनता धोखे में पड़कर उसके इस्तेमाल से दुःख न भोगे । देश में बीमारी, हत्या और दुःखों के बढ़ाने के कारण यही लोग हैं । ये लोगों को फँसा कर व्यभिचार के गढ़े में गिरा देते हैं । आइये, हम लोग इनकी कार्य कुशलता और कार्रवाई का तुरन्त ही नाश कर देश का उद्धार करें ।"

पशु तो अज्ञानी हो कर भी मदिरा का बहिष्कार करते हैं परन्तु
मनुष्य ज्ञानी होकर भी उसको पीता है।

कहा जाता है, जानवरों में विवेक बुद्धि नहीं है। पर वे भी जिस शराब से भागते हैं उसे मनुष्य पैसा देकर पीके पायमाल हो जाता है ।
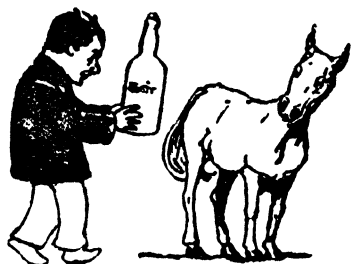
घोड़े ! ज़रा चखो !
भाई मुझे नहीं चाहिये !

अरे भाई बैल, चखो तो
सही, बहुत अच्छी है !
लेजा ! लेजा !

यह लो ! चाटो !
मुझे नहीं चाहिये भाई !

लो ! पी ओ !
छीः ! छीः ! बच्चो, दौड़ आओ !
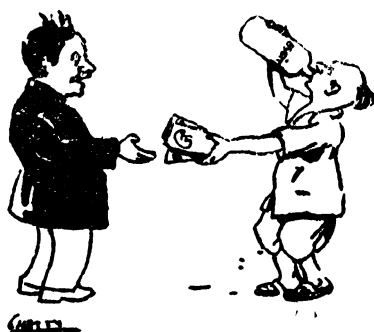
देखा भाई !

कुछ जानने योग्य बातें।

शराब की दूकान से जो पैसे बचेंगे वही दूसरी दूकानों में जायंगे। इसलिये अगर अपने देशके उद्योग-धंधों की तरक्की चाहते हो तो मदिरा का बहिष्कार करो।

शराब की दूकान और मद्य-पान से होनेवाली लीलाओं को देखना चाहें तो कोतवाली या कचहरी में चले जाइये।

*　　　*　　　*

बड़े से बड़ा पियक्कड़ भी शुरु में थोड़ा ही पिया करता है।

*　　　*　　　*

चाहे जितना रोको चोरी और हत्या तो कभी बंद न होगी, तो क्या कोई इससे यह कह सकता है कि चोरी और हत्या पर भी टैक्स लगा कर लोगों को चोरी या हत्या करने का अधिकार दे दिया जाय।

दो चार बच्चों की मां से पूछिये कि शराब की दूकानें रक्खी जायं या नहीं।

मद्य-पान से दो हानियाँ हैं—आमदनी भी कम होती है और हाथ में आया धन भी फ़िजूल में खर्च हो जाता है।

*　　　*　　　*

जो कहता है कि मैं कभी कभी पीऊंगा वह अन्त में पक्का पियक्कड़ बन जायगा।

*　　　*　　　*

यह न समझो कि ताड़ी दारू पीने से लाभ होता है। कोल्हू चलाने वाले बैल, और गाड़ी खींचनेवाले घोड़े, पानी पी कर ही परिश्रम करते हैं। हाथी, बाघ, सिंह भी पानी ही पिया करते हैं।

सूक्ष्म यंत्र वाली घड़ी में मिट्टी पड़ने से जो हालत होती है वही हालत नशे को थोड़ा पीने पर भी दिमाग़ की होती है।

(लूथर फ़ारबैङ्क)

* * *

यदि हिसाब लगाया जाय कि संसार में और सब पापों से कितने लोग, और शराब पीने से कितने लोग मरते हैं तो शराबखोरी से ही मरने वालों की संख्या अधिक होगी।

(लार्ड बेकन, विलायत का तत्वज्ञानी)

* * *

शराब बेचना ही बुरा है। यदि थोड़ी सी आमदनी की लालच में पड़ कर सरकार कलवारों की हिस्सेदार बन जाय तो फिर कहना ही क्या है? यह हिस्सेदारी तो हौवा और जूडा की हिस्सेदारी से भी बढ़ कर है।

(होरेस ग्रीली।)

* * *

हौवा शैतान से मिल कर एक फल की लालच में अपने दैवी पद को खो बैठी। जूडाने एक छोटी सी रकम की लालच में पड़कर ईसा मसीह को शत्रुओं के हाथ सौंप दिया था।

* * *

जब से अमेरिका में मद्यपान बहिष्कार का कानून बना तब से मेरा मोटर का कारोबार खूब बढ़ रहा है। उसके फल स्वरूप मेरे कार्य-कर्ताओं ने भी कई तरह के लाभ उठाये हैं।

(हेनरी फ़ोर्ड, जगद्विख्यात मोटर का व्यापारी)

अमेरिका के भिन्न भिन्न प्रान्तों के नेताओं ने सन् १९१९ ई. के दिसम्बर १७ वीं तारीख को अपनी रायें यों प्रकट की थीं :—

*　　　　*　　　　*

वाशिङ्गटन प्रान्त में तीन साल से मद्यपान बहिष्कार का कानून जारी है, उसके फल-स्वरूप देश के उद्योग-धंधों में, लोगों के नैतिक जीवन में और आमदनी के मदों में अच्छी तरक्की हुई है। कैदखानों में अपराधियों की संख्या घट गयी है। बैंकों में लोगों के जमा किये रुपये अधिक हो गये हैं। कारीगरी बढ़ी है। लगातार तीन चुनावों में जनता ने मद्यपान-बहिष्कार का समर्थन किया है।

(हार्ट, वाशिङ्गटन प्रान्त का गवर्नर)

*　　　　*　　　　*

छः मास तक मद्यपान बहिष्कार करने पर कैद खाने के कैदियों की संख्या आधी से कम हो गयी है। एक तिहाई कैद खाने तो एकदम खाली हो गये। सामाजिक परिस्थिति अच्छीहो गयी है, भीख मांगना कम हो गया है। मालिकों का कहना है कि कारखानों में काम पहले से अच्छा होता है और कारीगरों की स्थिति भी पहले से अच्छी है।

(जेम्स गुडरिच, इण्डियाना प्रान्त का गवर्नर)

*　　　　*　　　　*

मद्य-पान बहिष्कार के कानून के कारण केण्ट के प्रान्त में ५० सैकड़ा अपराध कम हो गया है। कई जेलखाने और गरीबखाने खाली हो गये। औद्योगिक प्रयत्न खूब बढ़े हैं। जिन पूंजीपतियों ने [illegible] कानून का विरोध किया था वे ही इसका समर्थन करते हैं।

(हमिल्टन, रिविन्यू कलैक्टर)

विलायती शराब।

मद्यपान से मनुष्य के शरीर और आचार को पहुँचनेवाली हानियों को सभी जानते हैं। शराब देशी हो चाहे विदेशी, चाहे बोतल में बंद हो, चाहे पीपे में भरा हो, पीने से हानि ही हानि है। पर विदेश से आनेवाले बीर, ब्रान्दी, ह्विस्की आदि, और इसी क़िस्म के इसी देश में तैयार होनेवाले बोतल-बंद शराबों से होनेवाली हानि बहुत ज्यादह है। पहली बात तो यह है कि देशी शराबों से इन विलायती मालों में खर्च ज्यादह होता है। दूसरी बात यह है कि इन विलायती मालों को देशी शराबों से ज्यादा इज्ज़त प्राप्त है जिससे इनका सामना करना बहुत मुश्किल है। ताड़ी आदि को लोग दूकानों में ख़रीद कर वहीं पी जाते हैं। लेकिन बोतल में बंद बीर, ब्रान्दी, ह्विस्की आदि लोगों के घरों तक में घुस जाते हैं। इस से स्त्रियों और बच्चों में पीने की आदत पड़ जाने का डर रहता है।

कोई यह न समझे कि राष्ट्रीय महासभा या मद्यपान-निषेध-संघ विलायती और देशी मदिरा में कोई भेद-भाव मानता है। हमारा उद्देश्य तो तमाम नशीली चीज़ों की जड़ खोद देना है। यहां पर हम मद्यपान सम्बन्धी एक पहलू पर विचार करने बैठे हैं। इससे यह न समझना चाहिये कि मद्यपान के पूर्ण बहिष्कार में हमारा उत्साह कम हो गया। विलायती शराब पीनेवाले यदि सिर्फ़ गोरे ही होते तो उनको कानून से बरी कर देने का विचार भी शायद किया जा सकता था। विदेशों से आकर यहां बसनेवाले लोग यदि कहें कि हम अपनी पीने की आदत छोड़ नहीं सकते और हमारे लिए विलायती शराब बहुत ज़रूरी है

तो हम देशी शराबों के बहिष्कार में ही अपनी ताकत लगाते। मगर बात ऐसी नहीं है। अगर हम भारत-वर्ष में विलायती शराबों के इतिहास की ओर ग़ौर करें तो साफ़ मालूम हो जायगा कि हम इस तरह का कोई भेद नहीं रख सकते।

विदेशों से आनेवाली बीर, ब्रान्डी, ह्विस्की आदि की तरह उतनी ही नशीली शराब हमारे देश में अधिकता से बनायी और उपयोग की जाती है। फिर भी पिछले कुछ वर्षों से हमारे देश में विलायती मालों का आना बहुत बढ़ गया है।

आज से २५ साल पहले भारत सरकारने विलायती मदिरा की आमद के बारे में एक बात कही थी। उसने कहा था कि देशी लोगों में विलायती शराब का प्रचार करने का विचार सरकार का नहीं है। जहां गोरे, पार्सी या दूसरे लोग इस विलायती शराब के आदी हो गये हैं वहीं इसकी बिक्री होगी। यह बात सरकार के अबकारी विभाग की कमेटी ने सन् १९०६ ई० में लिखी थी। अब देखना यह है कि आगे चल कर इस बात का कहां तक ख्याल रखा गया है। सन् १९०४--०५ ई० में भारत वर्ष में १२,९७,६११ गैलन विलायती माल आया। पिछले सन् १९२७—२८ में वही ६२,०७,३४० गैलन तक बढ़ गया। कहा जा सकता है कि इन बीस वर्षों में जन संख्या भी तो बढ़ गयी है। मगर विलायती मदिरा की आय तो ५०० सैकड़े बढ़ी है। अब बतलाइये कि सरकार की उपर्युक्त नीति का क्या हुआ?

पहले गोरे, पार्सी आदि कुछ ख़ास लोगों में ही विलायती शराब पीने की आदत थी। अब यह आदत साधारण जनता में भी फैलती

जा रही है। इसमें ज़रा भी शक नहीं। किसी ने हिसाब लगाया है कि विलायती शराब का आधा देशी लोगों में खपता है।

विलायती शराब की इस आमदनी की बढ़ती को न्याय-युक्त बताने के कई कारण अबकारी विभाग से निकलनेवाले इश्तिहारों में बताये जाते हैं। कृषि-प्रधान इस देश में कारीगरी का बढ़ना; सामाजिक और सामयिक बंधनों का ढीला होना; जन संख्या का बढ़ना; अबकारी विभाग की पहले से ज्यादा चौकसी के कारण छिपे तौर पर शराब तैयार करके पीने की कुप्रथा में कमी पड़ना आदि ये आय की बढ़ती के कारण बताये जाते हैं। मगर इन दलीलों से किसी को समाधान नहीं हो सकता।

हम चाहते हैं कि सरकार साफ़ साफ़ यह ज़ाहिर कर दे कि इस बारे में उसका क्या इरादा है? चाहे वह साफ़ कह दे कि "हमने अपनी राय बदल ड़ाली। देशी लोगों में विलायती शराब का प्रचार रोकने का अब हमारा इरादा नहीं है। अबकारी विभाग का मुख्य उद्देश्य अब पैसे की आमदनी बढ़ाना ही है। जहां जहां लोग पीने को तैयार हैं वहां वहां हम विलायती या देशी शराब की दूकान खोलेंगे। हम उन लोगों की बात नहीं सुनेंगे जो कहते हैं कि सरकार को मदिरा के व्यापार में दखल देना चाहिये।"

अबकारी विभाग के इश्तिहार कबूल करने हैं कि सामाजिक और सामयिक बंधन ढीले पड़ रहे हैं। तो क्या, अच्छे बंधनों को ढीला होने से रोकना सरकार का कर्तव्य नहीं है? जहां सामयिक और सामाजिक बंधन जनता की तन्दुरुस्ती और कुशल के लिये आवश्यक हैं वहां उन बंधनों को कायम रखने केलिए प्रोत्साहन देना न्याय युक्त नहीं है?

भारत वर्ष में मद्यपान सभी के लिये हानिकर है, चाहे आदमी बड़ा हो या छोटा। हमारे देश भाई यह अच्छी तरह समझते हैं और अबकारी विभाग की नीति को बदल देना चाहते हैं। भारत-वर्ष के प्राचीन धर्म और प्रत्येक मनुष्य का अटल विश्वास इस में प्रोत्साहन देते हैं। इनके जवाब में मद्यपान के पूर्ण बहिष्कार में कानूनी कठिनाइयों का बताना व्यर्थ है। उन कठिनाइयों को दूर कर जनता की इच्छा की पूर्ति करना ही सरकार का फ़र्ज है।

जयराम की पढाई।

अध्यापक ने पूछा—तेरा क्या नाम है?

लड़के ने जवाब दिया—जयराम।

लड़के का चेहरा सूखा हुआ, बदन दुबला और आँखें धसी हुई थीं। लड़के को देखने से बड़ा दुख होता था। उसका अँगरखा किसी बड़े लड़के का था। देखने से साफ़ मालूम होता था कि वह उसके लिये नहीं सिया गया था। उसकी धोती जगह-जगह पर फटी थी। सिर पर की टोपी रंग बिरंगे कपड़ों की खिचड़ी थी। किनारे पर सूत के धागे लटक रहे थे। सिर पर जगह जगह पर बाल का कोई चिह्न ही नहीं था। फ़ोडे के चिन्ह थे।

अध्यापक ने पूछा—बच्चा, तेरी क्या उम्र है?

लड़के ने कहा—नौ साल।

यह सुनकर सब लड़के हँसने लगे। पहला ही दर्ज़ा और लड़का नौ साल का। वाह! कैसी दिल्लगी है? मास्टर साहब भी हँसते हुए बोले "खामोश।" लड़के सब अपने हाथों से मुँह बंदकर एक दूसरे को देखकर आंखों से ही हँसने लगे।

अध्यापक ने पूछा:—क्यों तू इतने दिन किसी पाठशाला में शामिल नहीं हुआ?

लड़का कुछ जवाब न देकर जमीन की ओर ताकने लगा।

अध्यापक ने फिर पूछा "क्यों?"

लड़के ने कहा—घर में माँ की मदद करनेवाला कोई नहीं था। मैं बच्चे को सम्भालता था।

वर्ग के लड़के फिर हँसने लगे।

अध्यापक ने पूछा— तेरे बाप का नाम क्या है?

लड़के के जवाब देने से पहले ही एक दूसरा लड़का बोल उठा—यह पियक्कड़ मिठुआ का लड़का है, साहब।

सब ठठा कर हँसने लगे। लड़के का सिर नीचा हो गया।

इसी बीच में दुपहर की छुट्टी की घंटी बजी। सब लड़के बाहर जाकर खेलने कूदने लगे। दस बीस लड़कों ने जयराम को घेर लिया।

एक लड़के ने कहा—जरा टोपी तो दे, देखें।

एक और लड़के ने कहा—अरे, उसे क्यों छूता है? तुझे भी फोड़े-फुँसी लग जायंगे।

एक दूसरे लड़के ने कहा—न मालूम किस कूड़े में पड़ा था। उसकी अम्माने उठा कर सी-साकर अपने बच्चे को दे दिया होगा।

एक तीसरे लड़के ने कहा—जा जा। घर जाकर बच्चें को संभाल।

किसी और लड़के ने कहा—भाई, अंगरखा किसका है?

एक बड़े लड़के ने आकर पूछा—तेरे बापने कल कितना पिया?

एक छोटा लड़का जयराम के पास आकर उसके बदन को सूंघ कर बोला—बापरे! इसके बदन से भी शराब की बू आती है।

मालूम होता है यह भी पीता है। यों कह अपनी नाक ज़ोर से सिकोड़ कर इधर-उधर भागने लगा।

एक लड़के ने पूछा—क्यों रे, कल जो नाबदान में पड़ा हुआ था, वही तो तेरा बाप है?

एक लड़के ने चिल्लाया "पियक्कड मिठुआ का बेटा"। तुरन्त सब लड़के "पियक्कड मिठुआ का बेटा" कह कर चिल्लाते हुए उसके चारों ओर दौड़ने लगे।

कुछ लड़कों ने कहा—बापरे बाप! हम इसके साथ बैठेंगे कैसे?

इस तरह के अपमान को बेचारा जयराम सह नहीं सका। उसकी आंखों में आंसू भर आये। उसने उसे रोकना चाहा पर रोक न सका। किसी तरह जब संभाल नहीं सका तो आख़िर भागने लगा। सब लड़के उसके पीछे २ दौड़े। सड़क पर जाकर जयराम एकदम भागा। लड़के भी चिल्लाते हुए उसके पीछे पीछे दौड़े। लेकिन जयराम किसी गली में घुस कर गायब हो गया।

* * *

घर पहुँचने पर उसके मुँह से सिर्फ़ एक बात निकली "अम्मा"। मा की गोद पर सिर रख कर वह फूट फूट कर रोने लगा।

उसकी मा उसको कलेजे से लगा कर बोली "क्यों मेरे लाल! क्यों रोता है? क्या तुझे मास्टर साहब पाठशाला में शामिल न करेंगे?" बालक कोई जवाब न दे सका। रोता ही रहा।

पाठशाला में फिर घंटी बजी। लड़के सब अपनी अपनी जगह पर आ बैठे। अध्यापक ने पूछा—वह नया लड़का कहाँ है?

एक लड़का बोला—वह भाग गया, साहब। वह नहीं आयगा।

अध्यापक ने पूछा—क्यों?

एक छोटा बालक बोला—साहब, इन लड़कोंने उसको खूब सताया। वह बेचारा रोता हुआ भाग गया।

अध्यापक ने कहा—बच्चो! यह तुम लोगों की ग़लती है। सब बालक सिर झुकाये चुपचाप बैठे रहे।

अध्यापक ने पूछा—उसका घर किसको मालूम है?

कई लड़के उठकर एक साथ बोले—मुझे मालूम है, मुझे मालूम है।

"उसको समझाकर फिर लाना है। कौन जायगा?"

एक लड़का बोल उठा "बाप रे! उसका बाप मार डालेगा।" बाकी लड़के एक दूसरे का मुँह देखते हुए चुपचाप खड़े रहे। एक लड़का बोला, "मैं जाकर उसे बुला लाऊँगा।"

अध्यापक ने कहा "शाबाश। बजरंग, शाबाश। जा, उसकी मा को समझा बुझाकर लड़के को बुला ला।"

बच्चे आपस में कानाफूसी करने लगे, "बच्चा मार खाकर लौटेगा।"

(२)

मिठ्ठूलाल बड़ा पियक्कड़ था। वह शहर भर में पियक्कड़ मिठुआ या शराबी मिठ्ठू के नाम से मशहूर था। उसके पिता काफ़ी संपन्न थे। छोटी उमर में ही उसकी मा मर गयी थी। पिता ने बड़े लाड़-प्यार से लड़के को पाला। १६ साल तक लड़का पढ़ता-लिखता रहा। फिर बुरी संगत में पड़ गया। उसकी आदतें बिगड़ने लगीं। पहले पिताने

कुछ समझाया-बुझाया नहीं। पर थोड़े ही दिनों में समझाना-बुझाना भ' व्यर्थ हो गया। २२ वें साल में उसकी शादी हुई। पिताने समझा कि पुत्र इससे सुधर जायगा। लेकिन इससे भी कुछ नहीं हुआ। वह खूब पी लेता और नशे की हालत में कई लज्जाजनक काम कर डालता। उसकी दशा देखकर पिता को बड़ी चिन्ता हुई और इसी चिन्ता में पिता का देहान्त हो गया। उसके बाद मिठ्ठूलाल के मित्र उसे और भी बिगाड़ने लगे। थोड़े ही दिनों में वह कर्ज़ में डूब गया। माल-असबाब सब हाथ से निकल गये। रोटी के भी लाले पड़ने की नौबत आयी। कर्ज़ के मारे उसे बार बार अदालत जाना पड़ा। लेकिन यह उसके लिए एक तरह से अच्छा ही हुआ क्योंकि उसको अर्जियाँ लिखने का अभ्यास हो गया। जब उसके सब माल निकल गये और उनके फिर से मिलने की कोई आशा न रही तब वह और लोगों के लिये आर्जियाँ लिखने लगा। इस में रोजाना उसे एक रुपया मिल जाता था जिस में से दस आने का शराब पीता और बाकी छः आने घर के खर्चे के लिये अपनी स्त्री को देता था। बाज़ वक्त तो वह भी न देता था। स्त्री को खूब मारता। नशे में कभी कभी स्त्री को घर से बाहर निकाल देता और भीतर से दरवाजा बंद कर लेता था।

जिस घर में वह रहता था उसे भी कर्ज़दारों ने ज़ब्त कर लिया। ज़ब्त करने के लिये जब कचहरी के कर्मचारी आये तब मिठ्ठूलाल ने दंगा मचाया। एक कर्मचारी को चाकू से घायल कर दिया। पुलीस ने उसे पकड़ लिया। छः महीने की सजा हो गई। उसकी स्त्री और बच्चे मारे भूख के तड़फने लगे। उसकी स्त्री कर्ज़दारों की बहुत मिन्नतें कर भाड़े की चिठ्ठी लिखकर उसी घर में रहने लगी। मगर यह कुछ ज़्यादा दिन नहीं चला। कुछ समय बाद कर्जदारोंने उसे घर में रहने भी न दिया। वह अपने

बंधुओं के आश्रय में गयी। बहुत कुछ कोशिश कर एक बंधु के घर के पिछवाडे में एक झोपड़ी बनाकर वहीं रहने लगी।

जेल से लौटकर मिठ्ठू पहले से भी ज्यादह पीने लगा। दूसरे लोगों की बनिस्बत वह अर्जियाँ अच्छी लिखता था। इसलिए उसे पियक्कड़ जानते हुए भी लोग अर्जियाँ लिखने उसी के पास आते थे। वह रोजाना एक रुपया और कभी कभी डेढ़ रुपया भी कमा लेता था। लेकिन सारी कमाई शाम को शराब में चली जाती थी। अक्सर नशे में आकर सड़कों की मोरी में गिर जाता और रात भर वहीं पड़ा रहता। दूसरे दिन उसे अर्जियाँ लिखना भी कठिन मालूम पड़ता था। घर में खाने को कुछ न मिलने पर वह बड़ा दंगा मचाता था।

उसकी स्त्री को औरों के यहाँ नौकरी कर कमाने की ज़रूरत पड़ी। पहले वह जान-पहचान के लोगों के यहाँ जाकर आटा पीसना, धान कूटना आदि काम करने लगी। उससे जो कुछ मिलता था उसी में धक खर्च चलाती थी। फिर सब किसी के यहाँ जाकर काम करने लगी। जब काम करने जाती अपने छोटे बच्चे को जयराम के पास छोड़ जाती थी। उस समय जो कहीं मिठ्ठू घर आ जाता तो जयराम पर तो मानों बिजली ही गिर पड़ी। "कहां है, हे तेरी मा" कह कर लड़के को लात घूँसे से मारता। जहराम शिशु को बचाने की कोशिश में सारी चोट अपने ही पर लेता। कभी कभी मार न सह जाता तो खूब ज़ोर से रो उठता।

किसी किसी दिन मिठ्ठू का हृदय भी पसीजता था। लड़के और शिशु को गोद में उठाकर खूब रोता। निश्चय करता कि अब कभी शराब की दूकान के पास भी न जाऊँगा। परन्तु उसी दिन शाम को अर्जियाँ लिखकर घर लौटते हुए जब दूकान के पास से निकलता तब घर की सारी बातें भूल जाता था। अपने को भी भूलकर दूकान के अंदर चला जाता। फिर वही पुरानी बात।

(३)

बच्चा बड़ा हुआ। सब लड़कों को पाठशाला जाते देखकर जयराम के मन में इच्छा हुई कि मैं भी पाठशाला जाऊँ। एक दिन वह अपनी माता से बोला—"अम्मा! अब तो बच्चा बड़ा हो गया। आप ही खेल लेगा। मुझे पाठशाला जाने दो।"

मा बोली — लाल! तू पाठशाला कैसे जायगा? तुम्हारे पास तो पहनने को कोई कुरता नहीं। कपड़े सारे फटे हुए हैं। सब लड़के तुझे सतायँगे। तुझे बड़ा दुख होगा।

जयराम बोला—नहीं मा। बाजू के घर का मणिलाल मुझे अपना अंगरखा देगा। फटे कपड़ों को तुम सी डालो। लड़के मुझे सतायँगे नहीं। और अगर सतावें तो क्या? मैं नहीं डरने का। मुझे पाठशाला भेज दो।

माता बोली—अच्छा, मगर हर महीने एक दो रुपये मास्टर को तो देने पड़ेंगे?

जयराम—नहीं मा। चौक के पास जो लाल रंग की पाठशाला है उसमें चार आने ही देने पड़ते हैं। मैं उसी में जाकर पढ़ूँगा।

माता ने इधर-उधर माँगकर अपने बच्चे के लिए एक टूटी-पुरानी टोपी ला दी। उसे सी-साकर बच्चे को दिया और एक शुभ दिन को लड़के को पाठशाला में भेज दिया।

बाद का किस्सा तो ऊपर हम कह ही चुके हैं।

बजरंग आकर बोला—मास्टर साहब जयराम को बुलाते हैं।

जयराम की मा बोली—नहीं भाई, गरीब बच्चों के पढने की क्या ज़रूरत?

बजरंग बोला—मास्टर साहब ने बुलाया है। मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगा। आप उसे मेरे साथ कर कीजिये।

मा ने बच्चे की ओर देखा।

ज़यराम बोला—मा! मैं नहीं जाऊँगा। मुझे पढ़ना-लिखना नहीं चाहिये।

बजरंग बोला—डरो मत, जयराम। सब लड़कोंने तुम्हें बुलाया है। अब तुमको कोई नहीं सतायगा।

जयराम—मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं नहीं आता।

माता बोली—बच्चा! तुम जाओ। जयराम नहीं जायगा, छोटे बच्चे को सँभालने के लिये घर में कोई नहीं है। मैं धान कूटने जाती हूँ तो बच्चे को जयराम ही के पास छोड़ जाना पड़ता है। ग़रीबों को पढ़ने लिखने से क्या काम? जाओ। तुम जाकर मास्टर साहब से कह दो।

बजरंग चला गया।

उस दिन रातको घर आते ही मिठ्ठू ने जयराम को बुला कर पूछा—क्यों रे, किसके कहने से आज तू पाठशाला गया? क्या इसीलिये गया कि सारा शहर मेरी बदनामी करे। यों कहते कहते उसने जयराम को एक लात मारी। लड़का ज़मीन पर गिर पड़ा।

"बच्चे को क्यों मारते हो? मैंने ही उसे पाठशाला भेजा था" यों कहते हुए उसकी स्त्री जयराम को बचाने आयी।

मिठ्ठू कुछ न कह कर स्त्री के गाल पर ज़ोर की, एक चपत लगायी। स्त्री का सिर चकरा गया। वह दीवार के सहारे खड़ी

हो गयी। मिठ्ठू ने एक लात मारी। स्त्री गिर पड़ी। मिठ्ठू का क्रोध बढ़ा। पास ही एक लाठी पड़ी थी। उसे उठा लिया।

बोला--उठ।

ओफ़ कहते हुए वह उठी।

"क्या, तू जयराम को इसीलिये पाठशाला भेजने लगी कि सब कोई मुझे पियक्कड कहें।" उसकी चिल्लाहट से सारा घर काँपने लगा।

जयराम बोल उठा—नहीं पिताजी। माताजी ने नहीं भेजा। मैं ही गया। वह तो मना करती थी। वह धीरे से उठ कर पिता का हाथ पकड़ने लगा।

'छोड़!' यह कह कर उसने जयराम पर वह लाठी चला दी। लाठी जयराम के पेट पर लगी। एक हाथ से अपना पेट दबाते हुए दूसरे हाथ से वह अपने पिता का पांव पकड़ कर गिर पड़ा।

"आज चाहे जो हो। मैं किसी से डरनेवाला नहीं। आज एक-न-एक फैसला कर ही डालूंगा।" यों कह कर जयराम को लात मार कर दूर हटा दिया और हाथ की लाठी स्त्री पर फेंकी। वह दीवार से जा लगी और स्त्री बाल-बाल बच गयी। अगर वह स्त्री पर लगती तो न जाने कैसा अनर्थ हो जाता?

यह शोर सुनकर आसपास की कुछ स्त्रियाँ चली आयीं। कुछ स्त्रियाँ तो इसको रोज़मर्रे की बात समझकर कुछ ख्याल ही न करती थीं। फिर भी एक भीड़ लग ही गयी। मिठ्ठू बडबडाता हुआ वहां से खिसक गया।

जयराम बेहोश पड़ा था। मा रोने लगी, "हाय, मेरे लाल को मैंने ही मार डाला।" यों कह वह फूट-फूट कर रोने लगी। और

स्त्रियों ने जयराम को उठाकर एक साफ़ जगह पर लिटाया। उसके मुँह पर पानी छिटक कर उसे पानी पिलाने लगीं।

मा बोली—क्या मेरा लाल बच जायगा ?

एक स्त्री बोली—बदमाशने बच्चे को कैसा मारा?

एक दूसरी स्त्री बोली—न मालूम इन शराब की दूकानों को खोलने क्यों देते हैं ?

थोड़ी देर में जयराम के हाथ पांव ठंढे पड़ने लगे।

मा चिल्ला उठी—हाय मेरा लाल !

जयराम दुःख के पिंजडे से छूटकर प्रेममयी मा की गोद में जा पहुँचा। अब उसको इस संसार की पाठशालाओं से क्या काम था ?

मशीन और शराबख़ोरी ।

पहले के जमाने में हम सब काम हाथों से ही किया करते थे। आजकल सब काम कल से ही होने लगे हैं। हाथ से काम करने में तो कोई ख़तरा ही नहीं। मगर कल के काम में ख़तरे बहुत होते हैं। इसकी दो वज़ह हैं। एक तो मशीनों का बड़े ज़ोर से चलना, दूसरा बहुत से मज़दूर एक जगह पर जमा हो कर काम करना। एक के गाफ़िल रहने से सब पर आफ़त आ जाती है।

कल-पुर्ज़ों से होनेवाली दुर्घटनाओं को रोकने के दो तरीक़े हैं। एक तो उन दुर्घटनाओं को न होने देनेवाले कलों का उपयोग करना और दूसरा कारीगरों को अधिक सावधान रहने की शिक्षा देना।

दुर्घटनाओं को रोकने के लिये चाहे जितने तरह के कलों का उपयोग किया जाय परन्तु जब तक मज़दूर उससे बचाव के नियमों का पालन न करेंगे तब तक ख़तरे की संभावना बनी ही रहेगी। इसके लिये मज़दूरों का दिमाग हमेशा साफ़ रहना चाहिये। अपनी अक्ल से काम लेकर आफ़त से बचने को उन्हें हमेशा तैयार रहना चाहिये।

इससे यह अच्छी तरह समझ में आ जाता है कि मदिरा पी कर कलों में काम करने से ख़तरे का भय ज़्यादा रहता है। यह बात शराब, ताड़ी, ह्विस्की, बीर, ब्रान्दी आदि सभी नशों के लिये लागू होती है। इन शराबों में जो विष है वह—१. कारीगरों की अक़्ल को

मार देता है। इससे वह असावधान रहने लगता है। उन खतरनाक कामों को वह उस वक्त करने को तैयार हो जाता है जिन्हें दिमाग साफ़ रहने पर वह करने का साहस न करता। २. आफ़त के आ पड़ने पर उसे तुरन्त समझने की बुद्धि उसमें नहीं रहती। ३. आफ़त के आ पड़ने पर फ़ौरन विचार कर उससे बचने के उपाय ढूंढने में वह असमर्थ हो जाता है। ४. खतरनाक जगहों में सावधान रह कर उनसे अपनी रक्षा करने की उसकी शक्ति भी जाती रहती है।

यह बात नहीं है कि बहुत ज्यादा पी कर नशे में चूर रहने पर ही ऐसा होता है। थोड़ा पीने पर भी दिमाग जो ज़रा सा फिर जाता है वही भारी आफ़त पैदा करने के लिये काफ़ी है। सच तो यह है कि बहुत पी लेने के बजाय थोड़ा पीने से ही ज्यादा आफ़त का खौफ़ रहता है। पक्का पियक्कड़ देखते ही पहचान लिया जाता है। उस हालत में उसे कोई भी खतरनाक कलों के पास काम करने नहीं देता। ऊपर से देखने पर पिये हुए न दीखनेवाले पियक्कड़ों से ही ज्यादा आफ़त मचती है। फिर जांच करने पर भी यह बात ज़ाहिर नहीं होती।

लीप्सिग नामक शहर में बीमार कर्मचारियों की चिकित्सा करने के लिये एक संघ है। इस संघ के कार्यकर्ताओंने कुछ समय पहले पियक्कड़ों और दूसरे लोगों में होनेवाली बीमारियों तथा दुर्घटनाओं को जांच की थी। उन्होंने हिसाब लगा कर यह पता लगाया कि प्रति हज़ार मनुष्यों में ऐसी चोट जो चार सप्ताह के अंदर आराम हो जाय खानेवालों की संख्या ४२० थी। उनमें न पीनेवाले १०० और पीनेवाले ३२० थे।

फिर उस संघवालों ने यह हिसाब लगाया कि आराम होने के लिये चार सप्ताह से ज्यादह समय लेनेवाली चोटें खाये हुए कितने मनुष्य हैं।

एक हज़ार में कुल ७६ को ऐसी सख़्त चोट लगी थी। उनमें १९ न पीनेवाले और ५७ पीनेवाले पाये गये। इससे मालूम हुआ कि मद्यपान से कलों में होनेवाली दुर्घटनाओं की संख्या तिगुनी बढ़ जाती है।

चार्लस रेइडल नामक भौतिक शास्त्रवेत्ता ने कहा है: "मनुष्य जीवन, कीमती कल और उनको ठीक ठीक चलाने की ताकत ये तीनों अनमोल वस्तुएँ हैं। उन्हें शराब पीकर अक्ल खोये हुए नशे-बाजों के हाथों में सौंपना नहीं चाहिये। अगर ख्याल किया जाय कि आज-कल की कारीगरी के काम में मज़दूरों का दिमाग साफ़ रहना कितना ज़रूरी है तो साफ़ मालूम हो जायगा कि कलों की तरक्की और नशेबाज़ी ये दोनों बिलकुल एक दूसरे के खिलाफ़ हैं।"

इससे यह मालूम होता है कि पीने से हानि सौ साल पहले से अब ज्यादह है। कलों से मनुष्य मात्र को बहुत लाभ होते हैं। परन्तु उन कलों को चलाने के लिये साफ़ मस्तिष्क, स्थिर बुद्धि और नसों को काबू में रखनेवाली शक्ति ये तीनों चीज़ें जरूरी हैं। मद्य पान इन सब का शत्रु है।

ऊपर कहे हुए संघवालों ने और भी कुछ बातों की जांच कराई। उन्होंने पता लगाया कि पीनेवाले और न पीनेवाले दोनों को एक ही तरह की चोट लगे तो उन में कौन पहले चंगा होता है और कौन देर से। मालूम हुआ कि पीनेवालों ही के आराम होने में देर लगती है। न पीनेवालों के स्वस्थ होने में जितने दिन लगे पीनेवालों के स्वस्थ होने में उससे पौने चार गुना ज्यादह दिन लगे। यानी न पीनेवालों की इलाज में १०० दिन लगे तो पीनेवालों की इलाज में ३७२ दिन बेकार गये। मतलब यह कि कारीगरों को मद्यपान में सब तरह का नुकसान है।

अमेरिका के बोस्टन नगर के अस्पताल में दुर्घटनाओं में चोट खाये हुए लोगों का इलाज का एक अलग विभाग है। इसके प्रधान डाक्टर फिर्कले थे। उस अस्पताल में हर साल ऐसी चोट खाये हुए ४०,००० व्यक्ति लाये जाते थे। डाक्टर फिर्कले ने अपने अनुभवों में लिखा है कि इन दुर्घटनाओं में अधिकांश मद्यपान के ही कारण हुई और चोट खाया हुआ व्यक्ति अगर पीने का आदी रहा तो उसकी चिकित्सा में ज्यादह दिन लगे। उन्होंने कहा है कि टूटी हुई हड्डियों के दुरुस्त होने में और घाव के भरने में मद्यपान बड़ा बाधक है। मद्यपान शरीर के जीवाणु और नसों को कमज़ोर बना देता है। नतीजा यह होता है कि ऐसी हालत में टूटी हड्डियों के दुरुस्त होने में और घाव के भरने में समय ज्यादा लगता है।

चोरी का माल।

अनुचित आचरण करनेवाले अपने कामों को ठीक साबित करने केलिये अजब दलीलें पेश किया करते हैं। ऐसी ही दलीलों में से एक यह भी है कि मद्यपान को रोकने के लिये कानून बनाने से लोगों में छिप कर शराब पीने की आदत बढ़ जायगी। इसका समाधान कई बार किया जा चुका है। फिर भी ऐसे कानून के विरोधी बारबार वही दलील पेश करते हैं। आस्ट्रेलिया के एक मशहूर लेखक ने इस दलील की पोल खूब खोली है। उन्होंने कहा है:—

"सभी कानूनों के संबन्ध में यह बात उठती है। अगर संसार में कोई कानून ही न रहे तो गुनहगार भी न रहेंगे। फिर भी मैं तो उसी देश में रहना चाहूंगा जहां चोरी करना कानूनन मना हो; न कि उस देश में जहां राज कर्मचारी मदद देकर चोरी करें। मैं तो ऐसे देश के पास भी नहीं फटकूंगा। आस्ट्रेलिया के दूकानदार बेचारे आंसू बहाते हैं कि अमेरीका के लोग चुरा-चुरा कर पिया करते हैं। गैर कानूनी मद्यपान अमेरिका में भी है और मद्यपान रोकने केलिये कानून न बनानेवाली आस्ट्रेलिया में भी है। मगर मेरा झगड़ा "गैर कानूनी" इस लफ्ज़ से नहीं है। मेरा एतराज़ तो "पीने" से है।

"एक ग़रीब मज़दूर तन तोड़ कर मेहनत करता है और मज़दूरी कमाता है। उसको शराब की दुकान में गँवा कर खाली हाथ घर जाता है। उसकी स्त्री जब पैसे के लिये हाथ फैलाती है तब

अगर वह कहे कि मैंने अपने पैसे कुछ चोरी का माल बेचनेवाले को नहीं दिये मगर मैंने तो अपने पैसे कानूनन सरकार की इजाजत ले कर दूकान चलानेवाले को दिये, तो ज़रा सोचिये तो सही, इससे उसकी स्त्री कहाँ तक संतुष्ट हो सकती है?

यह सच है कि अमेरिका में छिपे तौर पर शराबख़ोरी जारी ही है। मगर क्या छिप कर एक व्यक्ति का एक बोतल भर शराब पीना बुरा है या कानूनन बहुतों का घड़ों शराब पीना बुरा है? आप ही सोचिये कि इन दोनों में से किससे देश को ज्यादह हानि है?"

इस सवाल का अमेरिका जवाब दे ही चुका है। अमेरिका की प्रजा, उसके राजनैतिक और सामाजिक नेता बेवकूफ़ नहीं हैं। अगर यह सच हो कि कानूनन घड़ों शराब पीने से चोरी छिपे बोतल भर शराब पीना ज्यादह हानिकर है तो वे बहुत पहले मद्यपान को रोकनेवाले कानून को रद्द कर देते।*

मगर हमारे भारत वर्ष के बारे में तो इन बातों की भी फ़िक्र नहीं है। हजारों वर्षों से इस देश में मद्यपान पंच महापातकों में से एक माना गया है। इस हालत में मद्यपान निषेध कानून का भंग करने का साहस थोडे ही लोगों को होगा। उनको रोकने के लिये देश की पुलीस ही काफ़ी है। अगर वे काफ़ी हों तो देश के लाखों स्त्री पुरुष स्वयंसेवक बन कर ऐसे कानून का पालन कराने में मदद देंगे।

* अफ़सोस की बात है कि अमेरिकाने अब उस कानून को रद्द कर दिया है। इस से आगे की बात हमारे लिये और भी विचारणीय है।

सिर्फ़ प्रचार काफ़ी नहीं।

अमेरीका का "येल" विद्यापीठ मशहूर है। इसमें कई कलाओं की शिक्षा दी जाती है। इसमें अर्थशास्त्र के आचार्य ईर्विंग फ़िशर थे। उन्होंने एक पुस्तक लिखी है जिसमें अपने देश को मद्यपान निषेध-कानून से होनेवाले लाभों का व्योरा है। कुछ लोग समझते हैं कि कानून बन जाय तो भी पीनेवाले किसी तरह पीकर ही रहेंगे; अच्छे अच्छे उपदेशों से ही पीने की आदत छुड़ाई जा सकती है। एक ही दम में पीने की आदत को छुड़ाना ग़लत है। इसको धीरे धीरे ही कम करना चाहिये। ऐसे कहनेवालों को फिशर साहब की पुस्तक सावधानी से पढ़नी चाहिये। अमेरिका की सरकार ने एक कमेटी नियुक्त की थी। उसमें आचार्य फिशरने जो गवाही दी थी, यह पुस्तक उसी का सारांश है। वे बीस वर्ष से ज्यादह के अपने अनुभवों को समय समय पर लिख रखते थे। उनसे जो नतीजे निकले वही इस क़िताब में शामिल हैं।

पुस्तक के पहले अध्याय में आचार्य ने अपनी ही जीवनी बहुत ही रोचक शैली में लिखी है। सन् १८९९ ई० में वे बीमार पड़े। तब अपना देश छोड़कर तन्दुरुस्ती सुधारने केलिये विदेश में रहने लगे। उस समय उनके वैद्यने उनसे कहा कि तुम जहाँ जा रहे हो वहाँ के वैद्य तुम्हें तन्दुरुस्ती के लिये अच्छा कहकर ह्विस्की देंगे। तुम उसे मत लेना। उस समय के बहुत से वैद्य समझते थे कि मधुसार तन्दुरुस्ती के लिये अच्छा है। फिर जब आचार्य फ़िशर की तबियत सुधरने लगी तब वे इस बात पर विचार करने लगे कि किस तरह के

परहेज से शरीर को ज्यादह आराम मिलेगा। बहुत जल्दी उन्हें मालूम हो गया कि मद्यपान तन्दुरुस्ती सुधरने में बड़ा बाधक है। उन्होंने अनुभव किया कि उससे शरीर की किसी तरह की भलाई नहीं होती और वह शरीर के अंगों के ठीक ठीक काम करने में बाधा डालनेवाला विष के समान है। आजकल के शरीर शास्त्र के मर्मज्ञों का भी यही निर्णय है।

जब उन्हें मालूम हुआ कि मद्यपान का एक हद तक उपयोग करने की अपेक्षा उसको एकदम बंद कर देना बहुत ज़रूरी है तब अपनी तन्दुरुस्ती के ख्याल से खुद तो उन्होंने मद्यपान का एकदम त्याग कर ही दिया और साथ अपने घर पर आनेवाले मेहमानों को शराब पिलाना भी बंद कर दिया। आपने जिस अर्थशास्त्र का सावधानी से अध्ययन किया था उसके आधार पर विचार करने पर उन्हें साफ़ विदित हुआ कि मद्यपान से देश की हर तरह से आर्थिक हानि होती है। वे लिखते हैं:—

"मैं सोचने लगा कि खूब जड़ जमाकर पड़ी हुई इस आदत को कैसे हटाया जाय। इसका जवाब आसानी से न मिलता था। कइयों को अब भी इसका ठीक जवाब नहीं मिला। मैं उस समय यह नहीं मानता था कि मद्यपान निषेध कानून बनाकर उसका पीना रोका जा सकता है। खाना, पहनना आदि मनुष्य के निजी व्यवहारों के बारे में कानून बनाया जाय तो फल यही होगा कि उसे न माननेवालों के मन में गुस्सा और असंतोष पैदा होगा। इसलिये ऐसे कानून का पालन कराना बड़ा कठिन हो जायगा। जब तक जनता के विचार साधक न हो तब तक किसी भी कानून का बनना व्यर्थ ही है। वे कोरे काग़ज़ी नियम रहेंगे। उस हालत में सरकारी नियमों को जो गौरव मिलना चाहिये वह कम हो जायगा। इसलिये शुरू में ही मैं इस

नतीजे पर पहुँचा कि मद्यपान को रोकने का कानून बना कर उसे अमल में लाने के लिये पहले जनता में प्रचार करना ज़रूरी है। मैंने समझा कि सब से पहला कर्तव्य यही है।

"मगर जल्दी ही मुझे इस प्रचार के ढंग की कमज़ोरी मालूम हो गयी।

"मानसिक शक्ति का ही घात करनेवाली आदत से छुड़ाने के लिये, कमजोर पड़ी हुई उसकी बुद्धि का भरोसा करने से क्या फ़ायदा? मद्यपान या अन्य नशीली चीजों के उपयोग से बुद्धि ही मंद पड़ जाती है। मनोबल को खो कर, अपने निश्चयों का आप ही पालन न कर सकनेवाले पियक्कड़, अपनी आदत के जाल में, फँसे रहते हैं। वे समझते हैं कि वे बुरा काम कर रहे हैं। परन्तु पीने की आदत से लाचार होने के कारण जानी हुई बात पर भी अमल करने की शक्ति उनमें नहीं रह जाती। विष बुद्धि का नाश कर देता है। तब फिर बुद्धि के सहारे विष को कैसे हटाया जाय? वह तो मानों जड़ काट कर पौधे को पानी से सींचना है।

"मैं जानता हूँ कि कुछ लोग प्रचार से ही सुधर गये हैं। साल्वेशन आर्मी (Salvation army) के कार्यकर्ता इस तरह हर रोज़ कुछ लोगों का सुधार करते हैं। परन्तु यही समझकर हम ज्यादा कुछ नहीं करते कि इसी तरह सब पुराने पियक्कड़ों का भी सुधार हो जायगा।

"बेहद पीनेवालेको ठीक रास्ते पर लाने के लिये उसके मनोबल का भरोसा नहीं किया जा सकता। एक हद तक पीनेवालों की बुद्धि एकदम नहीं मारी जाती। परन्तु ऐसे लोग कहा करते हैं कि भाई, मैं तो एक हद से पीता हूँ; अपनी आदत क्यों छोड़ूँ? इस से मेरी क्या

हानि हो सकती है? वे नहीं समझते कि उनका परिमित पीना ही उनकी बुद्धि और तन्दुरुस्ती का धीरे धीरे नाश कर देगा। वह नहीं समझ सकते कि पहले एक हद से पीनेवाले ही पीछे बेहद पीने लगते हैं और उसके गुलाम बन जाते हैं।

"इन सब बातों का विचार कर मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि जिन युवकों में परिमित पान करने की आदत भी अभी न पड़ी हो उन्हीं को सुधारने की कोशिश करनी चाहिये। मैंने समझा कि अंत में देश को मद्यपान से छुड़ाने का यही एक तरीका है। मेरी राय थी कि पाठशालाओं में मद्यपान की बुराइयों को बतलाकर प्रचार करना चाहिये।

"परन्तु जब सोचने लगा कि इस तरह के प्रचार का फल कितने दिन बाद मिलेगा तब मेरी चिन्ता बढ़ने लगी। इसके अलावा एक और बात है। इधर तो पाठशालाओं में मद्यपान की बुराई का राग आलापते हैं। उधर दूसरी ओर घर के भाई बाप वग़ैरह और शराब की दूकानें हमारे ठीक विरुद्ध प्रचार करती हैं। इसलिये आखिर मैं इस निर्णय पर पहुँचा—दूकान एक भी न रहे। यही दूकानें हैं जो कमज़ोर पियक्कड़ों को अपनी आदत को छोडने नहीं देतीं। यही दूकानें मद्यपान की आदत बढ़ाती हैं। हम चाहे पुराने अनुभवी पियक्कड़ों का ख्याल भी न करें। हमारा यह उद्देश्य रहना चाहिये कि उनके मर जाने के बाद उनके बाल बच्चे उसी आदत के गुलाम न बनें। मद्यपान पीढ़ी दर पीढ़ी सत्यनाश करता आया है। इसको रोकने का अब अवश्य प्रयत्न करना चाहिये। इसके लिये कानून बनने चाहिये। क्या हर कोई अफ़ीम खा सकता है? नहीं। वैसे ही मद्यपान को भी रोक सकते हैं। एक बार जो हमने उसे रोक दिया तो फिर उसे न लौटने देना आसान है।

"इसलिये अपने अनुभव से यह जान लियाँ कि सिर्फ़ प्रचार काफ़ी नहीं। नये नये आदमियों को अपने जाल में फँसानेवाली दूकानों को उठा देने केलिये कानून बनाना बहुत आवश्यक है।

"कुछ देशों में शराब लाभ के लिये नहीं बेचा जाता है, और न जनता को उसे खरीदने के लिये उत्साहित करनेवाले विज्ञापन ही छपते हैं। खुद सरकार सब माल अपने पास रख कर एक परिमित परिमाण में बेचा करती है। मैंने इस तरीके पर भी विचार किया। यद्यपि इससे थोड़ा लाभ है तो भी मद्यपान को रोकने का इसमें बल नहीं।

"आखिर मैं इस निश्चय पर पहुँचा कि जब तक जनता के विचार न बदलें और मद्यपान को रोकने के लिये कानून न बने तब तक उसी की सहायता लेकर, कानून बनाने की कोशिश करनी चाहिये।

"अमेरिका के वाशिंगटन नामक प्रान्त के कुछ शहरों में रहनेवालों ने पहले मद्यपान को रोकनेवाले कानून के खिलाफ़ अपनी राय दी थी। लेकिन गांवों के रहनेवाले सभी लोगों के उसके पक्ष में राय देने के कारण वैसा कानून बना। तब कोशिश की गयी कि उस कानून में ज़रा सा फेरफार कर अधिक नशा न देने वाले बिअर वाइन आदि की बिक्री हो सके। लेकिन मद्यपान को एक दम रोक देने से आर्थिक उन्नति हुई देखकर उन्हीं शहरवालों ने यह राय दी कि मद्यपान की पूरी रुकावट रहनी चाहिये और कानून में कोई तबदिली न होनी चाहिये।"

मद्यपान के बारे में शंकायें करनेवाले सभी को आचार्य फ़िशर की पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। हमारे देश और अमेरीका आदि पाश्चात्य देशों में दो भारी भेद हैं। एक तो उन देशों में एक हद तक पीना कोई लज्जा की बात नहीं। लोग घरों में ही मा बाप भाई बहन

सभी के सामने पी सकते हैं। अपने घरों में हम जैसे खीर, मिठाई वग़ैरह खाते हैं वैसे ही उनको घरों में बीअर, ह्विस्की आदि चीज़ें मान्य समझी जाती हैं। इसलिये उन देशों में मद्यपान को रोकना कठिन है। हमारे देश में ऐसी बात नहीं है। यह हमारे लिये बहुत अनुकूल अवस्था है।

दूसरा भेद हमारे अनुकूल नहीं है। पाश्चात्य देशों में शिक्षा खूब फैली है। वहाँ किसी बात का प्रचार करना आसान है। पक्के, जमे हुये पुराने आचारों को भी बदल डालने के लिये पुस्तकों, कर-पत्रों और पत्रिकाओं से प्रचार किया जा सकता है और उससे लाभ भी हो सकता है। परन्तु हमारे देश में तो ९९ सैकडा आदमी अपढ़ हैं। करोड़ों मनुष्यों के लिये काला अक्षर भैंस बराबर है। इतने लोगों को पढा-लिखा कर उसके बाद प्रचार करना असम्भव है। इस मद्यपान की आदत की जड़ जमने के पहले ही इसको हटाने की यदि हम कोशिश न करें तो फिर लोगों को इसके फंदे से बचाने का कोई तरीका ही न रह जायगा। शिक्षित देशों को जो सुविधायें प्राप्त हैं वे हमारे देश को नहीं हैं। इसलिये बहु-संख्या में लोगों के इसके जाल में फँसने से पहले ही हम मद्यपान को रोकने की कोशिश करें। पाश्चात्य देशों में जैसा इसका सिक्का जम गया है वैसा ही जो हमारे यहाँ भी जम गया तो फिर बचाव का कोई मार्ग ही नहीं।

सभी एक हैं।

कुछ बड़े लोग यह झूठी बात कहा करते हैं कि "मदिरा ही बुरी चीज़ है। उससे नशा ज्यादह होता है। उसको पीने की आदत पड़ जाय तो फिर उससे छुटकारा पाना मुश्किल है। पीनेवाला उसका गुलाम बन जाता है। मगर ताड़ी वैसा चीज़ नहीं है। दाम भी इसका ज़्यादह नहीं है। शरीर को इससे उतनी हानि नहीं होती जैसी मदिरा से। गरीबों के लिये यही तो एक शौक की चीज़ है।" उनका मतलब यह है कि मद्यपान को एकदम रोका नहीं जा सकता; इसलिये कम से कम खाली ताड़ी का उपयोग जारी रखा जाय। इसी तरह के लोग पाश्चात्य देशों में भी हैं। उनका कहना है कि बिअर और वाइन रहे; ह्विस्की ब्रान्दी आदि की ही रुकावट रहे। इस दलील को अमेरिका ने कबूल नहीं किया। उस देश की सरकारने सब तरह के मद्यपान को रोक रखा था।

सभी मद्य-पानों में नशा देनेवाली चीज़ उसका मधुसार है। क्या ताड़ी क्या मदिरा क्या ह्विस्की क्या बिअर सब में यह मौजूद है। हाँ, परिमाण अलग है। ताड़ी में ८ सैकड़ा, बिअर में ४ सैकड़ा और मदिरा में ५० सैकड़ा मधुसार है।

चाहे जिस का पान किया जाय इसी हिसाब से मधुसार शरीर में पहुँच जाता है। मदिरा से ताड़ी में मधुसार कम ही सही, मगर पीने का परिमाण ताड़ी का ज़्यादह होता है। इसलिये इसके ज़रिये भी शरीर में काफ़ी विष पहुँच जाता है। यही बात सभी मद्यपानों की है। सभी शरीर में विष को पहुँचा देते हैं। पूछा जा सकता है कि क्यों न हम एक हद से पीकर सँभल जाँय? बात यह है चाहे कोई मद्य हो, जब एक बार पी जाओ तो फिर दूसरी बार उसे पीने की इच्छा जरूर होती है। धीरे धीरे मन को काबू में रख कर उस इच्छा को रोकने की ताकत कम हो जाती है। दो तीन लोग इकट्ठे हो जायँ तो फिर तो कुछ कहना ही नहीं। एक दूसरे को प्रोत्साहित करता है, यह शंका होने लगती है कि हम कायर न समझे जाँय। बस, बेहद पी डालते हैं।

जिसने कभी पिया ही नहीं वह इस प्रोत्साहन का ख्याल भी न करेगा। लेकिन जिसने पीने की ज़रा भी आदत डाल ली वह इस प्रोत्साहन को सुनकर अपने को काबू में रखने की ताकत नहीं रखता। ज़रा सा पीने से होनेवाली बड़ी बुराई यही है। मधुसार का अंश कम रहनेवाली चीज़ों को पीने पर भी पीने की मात्रा अधिक हो जाती है, इसलिये थोड़ी मात्रा में अधिक मधुसारवाली चीज़ों के पीने का ही असर इससे भी होता है।

धीरे धीरे शरीर मधुसार के विष का आदी बन जाता है और ज्यादह पीने की आदत पड़ जाती है। मद्यपान करने पर पहले दिन जो खुशी मिली थी उसको पाने के लिये अब ज्यादा पीने की जरूरत मालूम होती है। कुछ लोग कहा करते हैं कि चाहे जितना मैं पीऊँ नशा नहीं चढ़ता। इसका मर्म यह है कि मद्यपान केविष से उसके

नस कमज़ोर पड़ जाते हैं और ऐसी दुरवस्था आ जाती है कि छुटकारे का उपाय नहीं रह जाता।

ज्यों ज्यों आदत बढ़ती है त्यों त्यों मद्यपान करने पर नशे का चढना कम होता है। फिर तो नशा न चढ़ने की तारीफ़ कर पीने वाले और भी ज्यादह पीने लगते हैं और अपने शरीर को बिगाड़ लेते हैं। पीते वक्त तो कहता है कि मेरी अकल ठीक है। लेकिन जब सारा शरीर बिगड़ जाता है तब पछताना पड़ता है।

उत्तम यंत्र ।

यह एक सुन्दर घडी है। इसका दाम छ. रूपया है। अगर
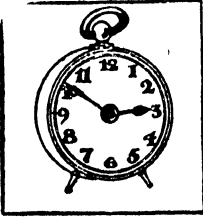
सावधानी से रखो तो पांच साल तक चलेगी। बराबर समय बतायगी । खोल कर देखो तो अंदर छोटे छोटे पहिये दीख पडेंगे।
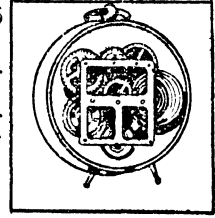
यह एक इञ्जन है। भारी से भारी बोझ को भी खींच सकती है। घंटे में ४० मील तक चलती है। इसको भी संभाल कर चलाना चाहिये। नहीं तो यह भी नहीं चलेगी।
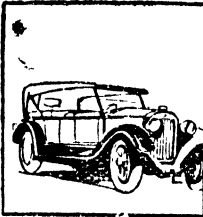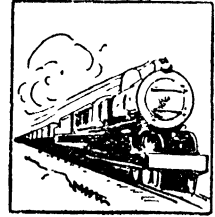
यह एक मोटर गाडी है। किसी भी सड़क पर चल सकती है। बहुत ही अच्छा मशीन है। दाम ४०००) है।

यह एक जहाज है। समुद्र पर इसके चलने के लिये हवा की जरूरत नहीं है। यंत्र के बल से चल सकता है। हजारों मील समुद्र की सफ़र कर सकता है। व्यापार के करोडों का माल ले चलता है।
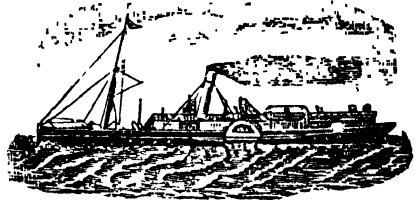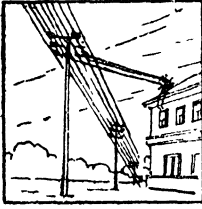
ये बिजली के कल हैं। यहाँ तारसे बोलो तो पल भर में हजारों मील दूर पर रहनेवाले सुन लें। इनको भी बड़े यत्न से रखना चाहिये। नहीं तो बिगड़ जायँगे। फिर कोई काम नहीं देंगे।
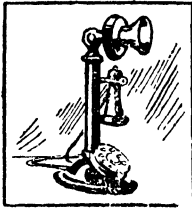
इन आश्चर्यजनक कलों से भी बढ़कर मनुष्य के शरीर और दिमाग आश्चर्यजनक हैं। किसी तरह की घड़ी इसकी बराबरी नहीं कर सकती। किसी तरह का मोटर, तार या जहाज इसके समान ताकत नहीं रखता।

इस शरीर का क्या मोल लगा सकते हो? करोड़ों रूपया लेकर भी इस कल को कोई नहीं बना सकता। घड़ी, जहाज वग़ैरह कलों में तो सिर्फ़ पहिये हैं। अक्ल किसी में नहीं। अगर उनमें कुछ बिगड़ जाय तो जरूरत पड़ती है मनुष्य की। कोई भी मशीन चाहे जितना भी अजीब हो, उसे चलाने केलिये मनुष्य की जरूरत है। मशीनों में कुछ बिगड़ जाय तो अपने आप ठीक हो जानेकी ताकत उनमें नहीं है। लेकिन मनुष्य का शरीर वैसा नहीं। वह अपने आप चलता है। अपनी त्रुटि आप ही वह जान सकता है। पहचान ने की अद्भुत शक्ति उस शरीर नामक मशीन को मिली है। पांच रूपये की घड़ी को हम बच्चों के हाथ में नहीं देते। डरते हैं कि वह उसे कहीं तोड़ न डाले। किसी भी कल हो, उसे ठीक ठीक चला सकने वाले योग्य मनुष्यों के हाथ में ही हम उसे देते हैं। मगर मनुष्य की बुद्धि, पहचानने की
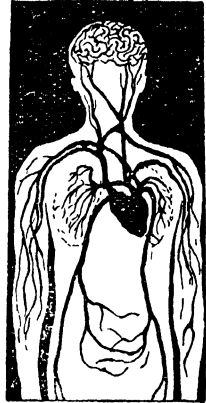
शक्ति और शरीर को बिगाड़नेवाली मदिरा का उपयोग हम धड़ाधड़ करते हैं। यह मूर्खता हम यह समझकर करते हैं कि हानि थोड़ी देर के लिये ही होगी। फिर ठीक हो जायगा। (Microscope) अणुवीक्षण यंत्र के सहारे भी हम दिमाग की सूक्ष्मता का ठीक ठीक पता नहीं लगा सकते। वैसे अद्भुत मशीन को हम बड़ी निर्दयता से खराब कर डालते हैं। घड़ी या मोटर के अंदर मिट्टी या कूड़ा डाल कर उसे ख़राब कर देना क्या आप तमाशा समझते हैं? मगर हम अपनी अक़्ल को इसी तरह ख़राब कर डालते हैं और फिर भी समझते हैं कि हम बड़ा मज़ा उठा रहे हैं। कैसी बेवक़ूफ़ी है? कोई भी मशीन जो हर रोज़ बिगड़ जाय और ठीक ठीक न चले वह ऐसी हालत में कितने दिन चलेगी? हम तो एक अनमोल अत्युत्तम मशीन को अपनी बेवक़ूफ़ी से खराब कर डालते हैं।

मेहनत और शराबखोरी ।

कुछ लोग समझते हैं कि मेहनत करके कमानेवालों को मद्यपान ताकत देता है । यह ग़लत है । शराब पीने से शरीर का बल किसी तरह नहीं बढ़ता । बड़े बड़े वैद्योंने जांच कर देखा है कि मेहनत करनेवालों को पीना चाहिये या नहीं । उन्होंने यह फैसला दिया है कि शराब, ब्रान्दी आदि किसी मद्यपान से शरीर का बल नहीं बढ़ता । पहाड़ पर जा कर काम करनेवालों की उन्होंने जांच की । मालूम हुआ कि पीनेवालों का काम धीरे धीरे कम होता जाता था । मदिरा धोखा देने वाली चीज़ है । उसमें फ़ायदा कुछ भी नहीं ।

तन तोड़कर काम करनेवालों की थकावट मद्यपान से कम नहीं होती । पीने से नस ढीले पड़ जाते हैं । थकावट ज्यादह मालूम होने लगती है और काम कम होता है ।

मद्यपान से कोई आराम नहीं मिलता ।

घर पर बाल बच्चों के साथ अच्छा खाना खाकर शुद्ध पानी पीओ और खेल तमाशे की बातें कर सो जाओ तो सारी थकावट दूर हो जायगी । शराब पीने में कोई फ़ायदा नहीं । शराब की दूकान पर या सड़क पर नशे में पड़े रहने के बदले अगर अपना समय घर पर अच्छी हवा में सोने में बिताओगे तो थकावट का नाम भी न रहेगा ।

कुछ लोग गलती से समझते हैं कि मदिरा पीने से शरीर गरम रहता है और ठण्ड कम लगती है। लेकिन होता क्या है कि खून के बराबर बहने के लिये आवश्यक नसों को मद्यपान कमज़ोर बना देता है। इससे रक्त तेज़ी से बहने लगता है। चमड़े के पास खून के ज्यादह आजाने से कुछ गरमी सी मालूम होने लगती है। सच तो यह है कि चमड़े के पास खून के ज्यादह आने से बाहरी हवा और ठण्ड उस खून को बिगाड़ देती हैं और हम कमज़ोर हो जाते हैं।

एक अंग्रेज़ सेना नायक ने जो जांच की थी उसका व्योरा सुनिये। एक बार उन्होंने अपनी सेना के तीन विभाग किये। एक टुकड़ी के सिपाहियों को वे अंग्रेज़ी ढंग पर भोजन के साथ २ रोज़ मदिरा वग़ैरह देते थे। दूसरी टुकड़ी के लोगों को सिर्फ़ थोड़ा बिअर पिलाते थे और तीसरी को किसी तरह का शराब न देते थे। उन्हें एक बार अपनी सारी सेना के साथ पैदल जाना पड़ा। शुरू में तो शराब पीने वाले सिपाही बड़े तेज़ चले। लेकिन कुछ दिन बाद वे पिछड गये और केवल बिअर पीनेवाले आगे बढ़ते गये। लेकिन जिस टुकड़ी के लोग किसी तरह का शराब न पीते थे वह सब से पहले निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचे। इससे यह निश्चय है कि मद्यपान से शुरू में यद्यपि थोड़ा उत्साह या फुर्ती मालूम पड़ती है तो भी अंत में उससे कमजोरी ही बढ़ती है।

शरीर की आंतडियों का बल एक बोतल ताड़ी या दो बोतल बिअर पीने से ४६ सैकड़ा घट जाता है।

बुद्धि से होनेवाले कामों में भी अर्थात् आंख, हाथ, पैर, अक्ल इन सब का जिन कामों में उपयोग होता है उनमें भी मद्यपान मनुष्य की शक्ति को कम ही करता है।

मद्यपान के विज्ञापन।

जब कहा जाता है कि शराब की दूकानों को बंद कर दो तब सरकार कहा करती है कि पीनेवाले तो किसी तरह पीकर ही छोड़ेंगे और अगर सरकार द्वारा मंजूर की हुई दूकानें न रहें तो लोग चोरी से व छिपकर शराब बनाकर पिया करेंगे। अगर यह दलील सच हो तो सरकार मद्यपान के विज्ञापनों को क्यों नहीं रोकती? पीने की आदत न रहने-वालों को भी जाल में फँसानेवाले इन विज्ञापनों की क्या ज़रूरत है? क्या पत्र पत्रिकाएँ, क्या दीवार और क्या रेलवे स्टेशन हर कहीं दिल लुभानेवाले तसवीरों से सज़े झूठ मूठ की बातों से भरे ह्विस्की, बिअर, ब्रान्दी आदि के इन विज्ञापनों को क्यों न रोका जाय? रण्डीबाज़ी और जुआखोरी का देश में समूल नाश नहीं हो सका है, तो क्या रण्डियों या जुआड़िओं के सचित्र विज्ञापनों को हम पुस्तक, पत्रिका या दीवालों पर निकलने देते हैं? इसी तरह "यह ह्विस्की ताकत देती है," "वह ब्रान्दी बीमारियों को रोकती है," "इस बिअर को पीजिये," "इस वाइन में अंगूर के सिवा दूसरा कुछ नहीं है, इससे थकावट दूर होती है। इससे गरमी शान्त होती है" इस तरह मय चित्रों के धोखे-बाज़ विज्ञापनों को भी तो रोका जा सकता है। पीने की आदत डालकर खूब पीकर अपना सत्यानाश कर लेनेवालों को तो जाने दीजिये। जो कभी न पीते हैं उन्हें भी जबरदस्ती अपनी ओर खींचनेवाले इन झूठे विज्ञापनों की मनाई करना तो ज़रूर न्याय संगत है। कम से कम इस संबंध में तो कानून बनाना सरकार का कर्तव्य है। विलायत से कई जहाजों में भर भर कर ह्विस्की, बिअर, ब्रान्दी आदि को भेजनेवाले बड़े बड़े व्यापारियों

से डर कर ही सरकार ऐसा कानून नहीं बनाती है। हमारे प्रतिनिधि तो यह समझ कर चुप रहते हैं कि सरकार हमारी बात को नहीं मानेगी। विलायत के इन व्यापारियों के विज्ञापन दिन दिन बढ़ रहे हैं। अमेरिका में तो मद्यपान की सख्त मनाई हो गयी है। इसलिये यूरप के व्यापारियों को हमारे भारत वर्ष का ही भरोसा है। पहले से ज्यादह कोशिश कर हमारे देश को लूटना चाहते हैं। वे आशा करते हैं कि भारत वर्ष में तो तीस करोड़ बेवक़ूफ़ रहते हैं, अगर वे पीने लगें तो बियर, ब्रान्दी वग़ैरह खूब बिकेंगे। हमारे पवित्र देश में विलायती मदिरा की आमद का यह किस्सा है:—

१९०४ ई में १३ लाख गैलन विलायती माल उतरा।

१९२७ ई में ६२ लाख गैलन विलायती माल उतरा।

१३ का ६२ यानी एक पियक्कड़ से पांच पियक्कड़ हो गये।

विलायत के मदिरा के व्यापारियों की भारत की सरकार पर भी बड़ी धाक है। जब तक हम सब एक हो कर आंदोलन न करेंगे तब तक उन पर फ़तह नहीं पा सकते। हमारे मंत्रियों को तो वे तिनका समझते हैं। उन्हें चोखा देते हैं। वे जानते हैं कि जो देशी शराब की बिक्री बंद हो जाय तो उनके माल की बिक्री भी साथ साथ बंद हो जायगी। इसलिये वे हमेशा इस बात पर ज़ोर देते रहते हैं कि शराब की दूकानें रहनी ही चाहिये और मद्यपान निषेध की बात फ़िजूल है।

वे जानते हैं कि एक अगर किसी तहसील में अगर सब दूकानें बंद कर दी जांय तो सभी तहसीलों में दूकानें आप ही बंद होने लगेंगी। वे यह कहने के आदी हैं कि'जहाँ १० दूकानें हों तहाँ आठ कर

डालो और मद्यपान को धीरे धीरे कम करो। वे "इस तरह इसलिये कहते हैं कि उन्हें मालूम है कि दूकानों को बंद कर देने से पीना कम नहीं होगा। बल्कि उससे बियर, ह्विस्की आदि की बिक्री बढ़ेगी। क्यों कि बोतलों को घरों में रखना आसान है।

हम इनके धोखे में न पड़ें। मद्यपान से पूरा छुटकारा पाने का घोर आंदोलन करें। अपने प्रतिनिधियों को सोने न दें।

विलायती मदिरा के व्यापार के लिये विज्ञापन बहुत ही आवश्यक है। इन विज्ञापनों को जो हमने रोक दिया तो समझिये कि एक क़िला हमारे वश में आ गया।

कुछ पत्रिकाओंने खुद ही मद्यपान संबंधी विज्ञापन छापना बंद कर दिया है। काफ़ी धन का लालच देने पर भी उस लाभ से अपने को वञ्चित रखनेवाली इन पत्रिकाओं की तारीफ़ करना हमारा कर्तव्य है।

दूकान का नीलाम।

सब लोग जानते हैं कि शराब की दूकान का नीलाम क्या है। शराब की दूकानवाले मकान या जिन घड़ों में शराब रहती है उनका नीलाम नहीं होता। एक गांव या शहर में और उसके आसपास जो पियक्कड़ रहते हैं उन्हें पिला कर उससे लाभ कमाने का हक ही बेचा जाता है। जो सरकार को ज्यादह पैसे दे सकता है उसको सरकार मदिरा बेचने का हुकुम देती है। इसके बाद अपने व्यापार के लिये नारियल या ताड़ के पेड़ों को खोज कर, उस पर लगनेवाले सारे खर्च अपने हाथ से व्यापारी को लगाना पड़ता है। उसे पेड़ों के मालिकों को, मज़दूरों को, गाड़ीवालों को और २ लोगों को भी रुपये देने पड़ते हैं। ये सारे खर्च, सरकार को दिया हुआ धन, दूकान का खर्च और अपना लाभ इन सब का हिसाब करके वह शराब का मोल लगाता है। और ग़रीब लोग दाम देकर नशा खरीदते हैं। इसी कमाई में से व्यापारी सरकार और ताड़ के मालिकों को रुपये देता है। ताड़ी उतारनेवाले, उसे दूकान पर लानेवाले, गाड़ीवाले और दूकान के कर्मचारियों को मज़दूरी देता है और इन सब को देकर बाकी रकम को अपने जेब में डालता है—यह उसका लाभ है। यही बात मदिरा के व्यापारियों की भी है। इसलिये पीनेवाला जितना ही ज्यादह खर्च कर पीता है व्यापारी को उतना ही ज्यादह लाभ मिलता है।

समझिये कि किसी स्थान में इस साल एक व्यापारी १०० रुपये देकर शराब बेचने का अधिकार पाता है। उसको अच्छा लाभ हुआ, तो दूसरे साल एक दूसरा व्यापारी १५० रुपये दे कर उसी

अधिकार को खरीदता है। उसको तो लाभ तभी होगा जब पहले से ज्यादा लोग पीने लगें। वह तो इसके लिये जरूर ही कोशिश करेगा। इस हालत में सरकार जो कहती है कि कलाल विभाग का उद्देश्य मद्यपान को कम करना ही है यह कहाँ तक सच है, यह आप हो सोच लीजिये। जो ज्यादह पैसा देता है सरकार उसी को अधिकार देती है। तो फिर व्यापारी के सारे प्रयत्न मद्यपान को बढ़ाने की तरफ़ न लगे तो क्या रहे? वे तो उन लोगों को अपने दुश्मन ही समझेंगे जो यह कहते फिरें कि "भाई, मद्यपान बड़ा बुरा है। वह शरीर और आत्मा दोनों का दुश्मन है। बाल बच्चों और स्त्री का ख्याल करो और शराब की दूकानों से दूर रहो।" जब एक से बढ़ कर एक, सरकार को ज्यादा पैसे देने को तैयार हो जाता है तब उसका उद्देश्य तो यही रहेगा कि मद्यपान खूब बढ़ जाय। यदि सरकार समझती है कि लोग तो किसी तरह पीकर ही छोड़ंगे, मदिरा आदि की एक हद तक ही बिक्री होनी चाहिये तो उसका ढंग ही अलग होना चाहिये। बेचनेवाले को कोई ऐसा अनुभवी कर्मचारी होना चाहिये जो अपने कर्तव्य को समझ सके। उसमें व्यक्तिगत लाभ की कोई गुंजाइश न हो। तभी तो बिक्री कम होगी। जब बिक्री की बढती पर ही व्यापारी के लाभ को बढ़ती निर्भर है तब व्यापारी का ध्येय मद्यपान को बढ़ाना ही रहेगा। हमारी सरकार अब इसी ढंग पर चल रही है।

सारयुक्त भोजन का नाश।

प्राचीन काल से बडे बडे विज्ञ आहार संबंधी खोज करते आये हैं। कई लोग कई जगहों पर अलग अलग इस बात की खोज करते थे कि मनुष्यों के नीरोग और सबल रहने के लिये किस तरह का खाना आवश्यक है। इन खोजों के फल स्वरूप हाल में एक बड़ी बात का पता लगा। वह है भोज्य वस्तुओं में "विटामिन" या जीवशक्ति का रहना। इन जीवशक्ति युक्त वस्तुओं का उपयोग न करने से मनुष्य निर्बल और कई तरह की बीमारियों का शिकार हो जाता है। शरीर की तड़ी, नस, ख़ून, हड्डी आदि के पोषण के लिये भोजन उसी हालत में लाभकर होता है जब उसमें वह जीवशक्ति "विटामिन" मौजूद हो। आजकल संसार के नामी वैद्य, शरीर-शास्त्रज्ञ आदि सब इस विटामिन तत्व को मानते हैं।

विटामिन या जीवशक्ति कई तरह की है। धान आदि में जो भूसा रहता है उसमें एक जीवशक्ति है। कलों में साफ़ होनेवाले चावल में यह शक्ति नहीं है। इसलिये आजकल बहुत लोग इस बात का प्रचार कर रहे हैं कि हाथ के कूटे चावल का ही उपयोग होना चाहिये।

एक दूसरी तरह की विटामिन फल और हरी तरकारियों में होती है। चूल्हे पर उबालने से यह शक्ति नष्ट हो जाती है। इसीलिये आजकल यह प्रचार होता है कि कच्ची चीज़ें खायी जायँ।

हम लोग प्राचीन काल से उबाली या पकायी हुई चीज़ों को ही खाने के आदी हो गये हैं। इस हालत में हम एकदम कच्ची चीज़ों

को ग्रहण न कर सकेंगे। वैसा करना ठीक भी नहीं। परन्तु हर रोज़ पकायी हुई चीज़ों के साथ थोड़ी सी तो कच्ची चीज़ों का उपयोग अवश्य ही करना चाहिये। अपनी ही तन्दुरुस्ती, अपने बाल बच्चों की तन्दुरुस्ती और देश की तरक्की के ख्याल से हमें इस सुधार को अवश्य ही मानना चाहिये।

अब सवाल यह है हमारे देश में ऐसी कच्ची चीज़ क्या है जिसका साधारण जनता आसानी से उपयोग कर सकती है। इसका जवाब देते समय हमें अपने देश की आजकल की बड़ी बुरी हालत का ख्याल रखना चाहिये। नारंगी में यह "जीव-शक्ति" खूब है। मगर क्या सब को यह महँगा फल आसानी से मिल सकता है?

दक्षिण भारत में, आज कल की परिस्थिति में सभी को आसानी से मिल सकनेवाली कच्ची चीज़ एक नारियल ही है। उसमें "जीव-शक्ति" और कई अंगों को पुष्टि देने की चीजें हैं। यह फल दक्षिण भारत में खूब मिलता है। इस लिये वह लाखों मनुष्यों का आहार बन सकता है। सब उसको बड़ी रुचि से खा सकते हैं और शास्त्र-सम्मत भी है। दूसरे फलों के मुकाबले में इसका दाम भी ज्यादा नहीं है। इसलिये कच्चे नारियल को आहार में शामिल करने के विरुद्ध कोई आक्षेप नहीं हो सकता।

इस तरह के सारयुक्त आहार देनेवाले नारियल के पेड़ों को जब ताड़ी के वास्ते बरबाद किया जाता है तब उसे देख कर भला किसका दिल न टूटेगा? ताड़ी से देश को होनेवाली कई हानियों में यह भी एक है। जिन पेड़ों पर झुण्ड के झुण्ड फलों को लटकना चाहिये उन पेड़ों पर हम हाँडी को लटकते देखते हैं। शरीर की तन्दुरुस्ती, बल

और तेज को बढानेवाले अमृत को हम विष बना डालते हैं और उसी को पीकर शरीर और आत्मा दोनों का नाश कर डालते हैं।

पेड़ों के मालिक समझते हैं पहले ही पैसे लेकर पेड़ों को ठेके पर दे देने से उन्हें बड़ा लाभ होता है। अगर यह सच है कि नीरोग रहना दौलत से भी बढ़ कर है तो कहना चाहिये कि इस से उन मालिकों की और देश की हानि ही होती है। अगर उन पेड़ों के नारियलों और उसके दूध का वे लोग, उनके बाल बच्चे और अन्य लोग उपयोग करें तो कई गुना ज्यादा लाभ हो सकता है।

देश से ताड़ी के प्रचार को बंद करने के लिये यही एक कारण काफ़ी है कि उससे एक बहुत ही उपयोगी भोजन का नाश होता है। जनता की भलाई का ख्याल रखनेवाली सरकार इस एक बात पर ही उसकी मनाई कर देगी। लेकिन हमारी सरकार को एक मात्र आमदनी का ही फ़िक्र है। लोगों की चाहे जो हालत हो उन्हें क्या फ़िक्र?

हिंसा ।

उत्तम अमृत को भी बुद्धिहीन मनुष्य घोर विष बना डालता है। नारियल शरीर का बल और तेज बढानेवाला, उत्तम बड़ा स्वादिष्ठ और भोज्य पदार्थ है। भगवान को भेंट चढाया जाता है। नारियल के पेड़ों को जो इस संसार का कल्प-वृक्ष कहा जाता है, वह ठीक ही है।

भू-माता का अमृत-स्रोत जब पेड के ऊपर चढ़ कर फल बनने लगता है तब निर्दयी मनुष्य उसे तेज़ चाकू से काट कर रक्त की हाँड़ी भर लेता है और उसी को पीकर शरीर और बुद्धि दोनों को खो बैठता है।

और देशों में भी मदिरा बनाने या बियर बनाने में भोज्य वस्तुओं का नाश किया जाता है। लेकिन हमारे देश में शराब बनाने में भोज्य वस्तुओं के साथ साथ उन पदार्थों को देनेवाले पेड़ों का भी नाश कर डालते हैं। वाइन बनाने के लिये अंगूर को निचोड़ कर उसका सार निकालते हैं। उस पौधे का नाश नहीं करते। लेकिन ताड़ी के लिये हम पेड़ का ही नाश कर डालते हैं। इस संबंध में सरकार का कृषि विभाग भी लोगों को नहीं समझाता। सरकार तो खुद ही मद्यपान से मिलनेवाले लाभ की प्रतीक्षा करती रहती है। वह यह क्यों कहेगी कि ताड़ी निकालने से पेड़ों का नाश हो जाता है। लेकिन हमारी बुद्धि कहाँ गयी है? नकद रुपये के लालच में पड़ कर हम क्यों अपने बाप दादों के लगाये पेड़ों का नाश कर रहे हैं?

हमारा विश्वास है कि हरे भरे पेड़ों को नहीं काटना चाहिये, बगीचों की वृद्धि करानी चाहिये, हर एक मनुष्य को मरने के पहले कम से कम एक वृक्ष लगाना चाहिये और उसे बढ़ा कर अपनी संतति के लिये छोड़ जाना चाहिये। इस हालत में वृक्षों का नाश करना बड़ा पाप है। कुछ लोग कह सकते हैं कि ताड़ी उतारने से पेड़ खराब नहीं होते। लेकिन सब जानते हैं कि ताड़ी उतारने से पेड़ कमज़ोर हो जाते हैं। उनकी वृद्धि रुक जाती है। आयु कम हो जाती है। पेड़ का जीवन-स्रोत ही फल बनता है। पेड़ अपना रक्त बहाकर फल उत्पन्न करता है और अपने शिशुतुल्य उन फलों को आहार पहुंचाता है। ताड़ी उतारने में पेड़ों के उसी रक्त को हम हाँडी में बहाते हैं। उसके दर्द को हम क्या जानें? वह तो बोल नहीं सकता। कुछ दिन सह लेता है। फिर प्राण देकर छुटकारा पाता है।

ब्रह्मा को जीतना ।

१

(यम और हिरण्यकशिपु बातें कर रहे हैं)

यमः—अपने पाप या पुण्य कर्मों के ही फल मनुष्य दूसरे जन्म में दुःख या सुख के रूप में भोगता है। इसीका नाम कर्मभोग है।

हिरण्यः—यह क्या बखेड़ा है? ऐसा क्यों हो? इसके लिये कोई अच्छी युक्ति निकालनी ही चाहिये।

यमः—यह नहीं हो सकता। कर्म को कोई नहीं जीत सकता है। अपने किये के अनुसार ही मनुष्य को सुख या दुःख भोगना पड़ेगा।

हिरण्यः—सुख और दुःख तो सिर्फ़ मन की भावनाएँ हैं।

यमः—हाँ, हाँ, सुख दुःख तो दोनों भौतिक हैं। वे इससे परे नहीं हैं।

हिरण्यः—और भावनाओं का मूल स्थान तो दिमाग़ ही है न?

यमः—हाँ, वैद्यक शास्त्र तो यही कहता है।

हिरण्यः—तब फिर सुख दुःख को भी वैद्य ही पैदा कर सकते हैं। तब फिर कर्म की क्या जरूरत है?

यमः—नहीं, वैसी बात नहीं। वैद्य लोग कर्म को नहीं बदल सकते।

हिरण्यः—मैं तो समझता हूँ कि मेरे वैद्य बदल सकते हैं। अगर वैद्यक शास्त्र सच हो तो दिमाग को सुख पैदा करनेवाली दवा देकर क्यों न दुःख को दूर किया जाय? मैं तो जरूर कोशिश करूंगा।

२

(हिरण्यकशिपु और शुक्राचार्य)

हिरण्यः—इस घमण्डी यम की बातें मैं आप को सुना चुका हूँ। आपने सुन लिया न? अब हमारे वैद्यों को खूब समझा कर आज्ञा दीजिये कि वे आठ दिन के अंदर दिमाग में सुख पैदा करनेवाली दवा तैयार करें।

शुक्राः—महाराज! इस से क्या लाभ है? दवा से पैदा होनेवाला आनंद तो झूठा होता है।

हिरण्यः—झूठ क्या है और सच क्या है? सुख और दुःख दिमाग में पैदा होनेवाली भावनाएँ ही तो हैं?

शुक्राः—सुख और दुःख कर्म के फल हैं। क्या कर्म दवा के बल से बदल सकता है? यह तो कर्मफल का मज़ाक उड़ाना हुआ। ब्रह्मा की विधि से कोई बचाव नहीं।

हिरण्यः—(बड़े क्रोध से) यही तो आपकी ढिठाई है। अब मुझसे उस ब्रह्मा की बड़ाई न कीजिये। बुलाइये वैद्यों को।

शुक्राः—जो हुक्म।

३

(हिरण्यकशिपु और वैद्य)

हिरण्यः—वैद्यो! आनंद दिमाग में पैदा होनेवाली एक भावना मात्र है। दुःख भी एक दूसरी तरह की भावना है। इस को आप लोग मानते हैं?

वैद्यः—जी हाँ।

हिरण्यः—अब आप लोग आठ दिन के अंदर खोज कर के दिमाग में आनंद पैदा करनेवाली दवा तैयार कीजिये। यह मेरी आज्ञा है। आपको इसे मानना पड़ेगा।

वैद्य:—महाराज !

हिरण्य:—महाराज दूसरा कुछ सुनने के लिये तैयार नहीं हैं। इंद्रियों के द्वारा दिमाग में पैदा होनेवाले दुःख की भावनाओं का नाश कर सुख के अनुभव पैदा करनेवाली दवा आपको तैयार करना पड़ेगा। आप ऐसी दवा तैयार करें जिसके खाने से एक बहुत सा और बहुत से एक सा, भलाई बुराई सा और बुराई भलाई सा, ऊपर नीचे सा और नीचे ऊपर सा, जो है वह नहीं सा और जो नहीं है वह वर्तमान सा मालूम होने लगे। मैं दिमाग और बुद्धि दोनों का रहस्य जान चुका हूँ। अब मेरा निश्चय है कि ऐसी दवा तैयार कर ब्रह्मा की रचना में गड़बड़ मचा दूँ। इसमें कोई तकलीफ़ नहीं है। आप लोग मुझे धोखा देना चाहते हैं?

वैद्य:—नहीं, मालिक, ऐसी बात नहीं।

हिरण्य:—अब मुझसे कहने से कोई फ़ायदा नहीं। आप लोगों की सहानुभूति तो ब्रह्मासे है। आप लोगों का मुझसे ज़रा भी प्रेम नहीं है। उसी के शासन को आप लोग मजबूत बनाना चाहते हैं। कल कोड़ों की मार पड़ने पर दूसरा राग आलापने लगोगे।

वैद्य:—नहीं, नहीं। मालिक! हम ऐसी दवा को ज़रूर खोज निकालेंगे। दरबार के हुक्म के खिलाफ़ चीं चपड़ कैसी?

४

हिरण्यकशिपु और शुक्राचार्य; ऊपर ब्रह्मा और नारद।

हिरण्य:—आचार्य जी! क्या, दवा तैयार हो गयी या वैद्य अब भी धोखा देते ही जा रहे हैं?

शुक्रा:—महाराज! काम पूरा हो गया। यह दवा तैयार है। मैं इसकी क्या तारीफ़ करूँ? यह निश्चय है कि यह ब्रह्मा को जीत

लेने वाली दवा है । इसको पीने के थोड़ी ही देर बाद कर्म पलट जायगा । पाप (कर्म) करनेवाला भी बड़ा आनंद पायगा । मन के अंदर घुस कर हल्ला मचानेवाला नारायण ग़ायब हो जायगा । भलाई बुराई की पहचान नहीं रह जायगी । सारा दुःख उड़ जायगा । रात का दिन हो जायगा और दिन की रात । रोटी के लिये भी तड़पने-वाला लखपती के समान सुखी हो जायगा । जो कर्ज में डूबा हो वह भी हँसी खुशी से खेलेगा । ठण्ड गरमी मालूम पड़ेगी और गरमी ठण्ड । शरीर में बीमारी हो तो भी बड़ा सुख मालूम पड़ेगा । ब्रह्मा का हर एक नियम उलट जायगा ।

(शराब की हाँडी उसके हाथ में देता है ।)

हिरण्य :—शाबाश ! मैं यही चाहता था । आप तो कहते थे नहीं हो सकता । अब तो देख लिया न ? अब इसके सहारे से ब्रह्मा का सामना करूँगा ।

(ऊपर से इन सब को देखकर ब्रह्मा और नारद हँसते हैं ।)

नारद :—बेवक़ूफ़ नीच शराब को लेकर सुख की आशा करता है ।

ब्रह्मा :—यह मूर्ख नहीं जानता है कि झूठे आनन्द से अंत में महान दुःख ही मिलता है ।

जादूगर ।

.माधवपुर नाम का एक नगर था । वहाँ कई तरह के कारीगर बड़े आराम से रहते थे । सब खुशहाल थे ; किसी को किसी बात की कमी नहीं थी । दुःख, बीमारी, झगड़ा, फ़साद, अकाल मृत्यु आदि का नामों निशान नहीं था । विद्या, धन, नीरोगता आदि ही का उस नगर में वास था । सब की अच्छी आमदनी थी । इसलिये अपनी आवश्यकताओं के लिये भी खूब खर्च करते थे और नगर के सार्वजनिक काम के लिये भी खूब रुपये देते थे । इसी से सड़कों पर चिराग़ जलते थे, पाठशालाएँ चलती थीं और मंदिरों में पूजा का काम भी ठीक ठीक चलता था ।

उस नगर में एक दिन एक आदमी आया । उसने कहा कि मैं जादूगर हूँ । कई अजब काम कर दिखाऊँगा । लेकिन उस नगर के रहनेवाले तो सब अपने अपने काम में मस्त थे ; इसलिये उसकी किसी ने परवाह न की । सब अपने अपने काम करने में मशगूल रहे ।

एक दिन वह जादूगर चौक के पास खड़ा हुआ । उसके सामने कई शीशे रखे हुए थे । वह चिल्ला २ कर उनका बयान करने लगा । " महाशयो ! भाइयो ! बहनों ! यह देखिये । क्या आप लोग जानते हैं कि इन शीशों में क्या है ? यह है कलियुग का अमृत । बड़ी अजब दवा है । इसी का नाम जीवन रस है । अब देखिये इस की खूबी बताता हूँ । इसकी बूंदें सूर्य की किरणों में कैसी हीरे सी झलकती हैं ।

इसकी हर एक बूंद आपमें नये जीवन का संचार करेगी। इस कलियुग के अमृत को जरूर खरीदिये।"

जब शाम को नगरवासी अपने अपने काम से घर लौटने लगे तब इस जादूगर की चिल्लाहट सुनकर उसके पास गये। वह जादूगर मीठी आवाज़ में कहता गया:—

"आप लोग मेरी बातों का विश्वास न करें तो पहले इसको पीकर देखें। बाद में पैसे दें। ऐसा मीठा शरबत तो आप ने जिन्दगी में कभी न पिया होगा। कितना स्वादिष्ठ पदार्थ है? वाह! इसकी मैं कहां तक तारीफ़ करूँ? आप लोग दिन भर के हारे थके हैं। अब इसका एक आधा गिलास लेकर पीजिये। आप की थकावट एक दम गायब हो जायगी। आप लोग सच्चा सुख क्या जानें? दिन भर तन तोड़ कर मेहनत करते हैं और शाम को घर लौट कर मुर्दे को तरह पड़ कर सो जाते हैं। इस अमृत को जो पीयगा उसकी तो सारी रात बड़े आनंद में कटेगी। नींद और चिन्ताएँ पल भर में भाग जायँगी। रोनेवाले मारे खुशी के नाचने लगेंगे। भूखे इस को ज़रा सा पीवें तो भूख नहीं रहेगी। बूढ़े इसको पीकर जवान बन जायंगे। कमज़ोर इस को पीकर शेर बन जायंगे। बीमार नीरोग हो जायंगे। कम अक्लवाले इसको पीकर बृहस्पति बन जायंगे। दाम इसका बहुत कम है। फ़ी शीशी आधा आना! वाह! आधे आने का ख्याल कर क्या आप लोग अपने को इस भूलोकी अमृत से वंचित रखेंगे?"

पहले दो तीन रोज़ तक कोई इस जादूगर के फंदे में न आये। डरते थे कि न मालूम क्या हो। लेकिन वह निराश होनेवाला न था। रोज़ उसी चौक पर उसकी चिल्लाहट जारी रहती थी। आखिर कुछ

लोगों का साहस हुआ कि देखें, इस में है क्या। उनकी देखा-देखी में और भी कुछ लोग लेकर पीने लगे। पीनेवाले उसकी तारीफ़ करने लगे। इस तरह उस जादूगर का व्यापार जल्दी जल्दी बढ़ने लगा। दो तीन साल के अंदर उस नगर के तीन चौथाई लोग उस के मामूली ग्राहक बन गये। हर गली में उसकी दूकान खुल गयी।

ज्यों ज्यों व्यापार बढ़ा त्यों त्यों 'अमृत' का दाम भी बढ़ा। जो शुरू में आधा आना था वह दो आने हुआ और चार आने तक पहुँच गया। लेकिन लोग उसे पीते ही रहे।

२

माधवपुर में कुछ बुद्धिमान लोग थे। नगर पर जो आफ़त आयी इससे उन्हें बड़ी चिंता हुई। वे लोगों को समझाने लगे— "भाइयो! ज़रा सोच कर तो देखो। तन तोड़ कर पैसा कमा कर उसे इस तरह क्यों नाहक उड़ा देते हो? अब तो संभलो। वह जादूगर बड़ा शैतान है। धोखेबाज़ है। उसके पास भी न जाओ। वह जो बेचता है वह दवा नहीं है। न मालूम क्या जादू है। आप लोगों को ठग कर आपके पैसे छीन कर आप सब को गहरे गड्ढे में ढकेल रहा है। उसके पास जाओ ही नहीं।"

लेकिन उन की बातों का किसी पर कोई असर नहीं हुआ। एक बार जो जाल में फँसे वे फँसे ही रहे। वे कहने लगे—"पैसा जाय, चाहे जो हो। वाह! उस दवा में कैसा मजा है? वह तो चिन्ताओं को भगा देती है। थकावट को दूर करती है। भूख को मिटा देती है। जोश पैदा करती है। और फिर हमें जरूरत ही किस बात की है?"

लेकिन जो लोग उसके जाल में नहीं फँसे थे वे उन बुद्धिमानों की बातों से सचेत हो गये। वे उस व्यापारी की जादूगरी को समझ गये। उन्होंने देखा कि उसके पैसे तो दिन प्रति दिन बढते जाते हैं और उसके जाल में फँसे हुए उनके भाई बंधु उसी हिसाब से रोज़ बरोज़ गरीब होते हैं। इस लिये वे सब लोग एक साथ मिल कर राजा के पास गये और अपनी राम कहानी सुनायी।

लोगों के ग़रीब हो जाने से राजा की आमदनी भी कम हो रही थी। इसलिये उसने व्यापारी को बुलाकर कहा कि तुम्हें तुरन्त ही इस नगर को छोड़ कर चला जाना पड़ेगा। जादूगर ने कहा—"कुछ नीच चुगलखोरों की बात सुनकर महाराज! आप मुझे इस नगर से चले जाने का हुक्म देते हैं। क्यों आप को मालूम है कि इसका क्या परिणाम होगा? आप का शासन ही भारी संकट में पड़ जायगा। इस नगर के अधिकांश लोग मेरी तरफ़ हैं। उन सब को मैं हर रोज़ बेहिसाब मज़ा देता हूँ। यहां से मेरे निकाले जाने की बात जो उन्हें मालूम हो जाय तो वे लोग दंगा करने लगेंगे। इसलिये सब बातों का खूब विचार करके फ़ैसला कीजिये। अब इस बात को जाने दीजिये। अब यह तो बताइये कि मेरे कारण आपको कितने की हानि हुई है?"

राजा ने अर्थ मंत्री से पूछा। मंत्री ने कहा कि करीब एक लाख की हानि हुई होगी। जादूगर बोला—"तो लीजिये। वह एक लाख रूपये मैं अभी दे देता हूँ। उसके अलावा आप के निजी खर्च के लिये भी एक लाख रूपया अलग देता हूँ। औषधालय बनाने के लिये एक लाख रूपये और देता हूँ। अब प्रस्तुत इस नगर में पाठशालाओं के लिये कोई अच्छा मकान नहीं है। एक विशाल भवन बनाने के लिये पौन लाख रुपये देता हूँ। आप के कर्मचारियों की बड़ी शिकायत है

कि तनख्वाह काफ़ी नहीं मिलती। उनका वेतन बढ़ा दीजिये। खास उसके लिये दो लाख रूपये और भी देता हूँ।"

उसकी इन बातों को सुनकर सब को बड़ा संतोष हुआ। राजा को बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि ऐसे उत्तम प्रजा हितैषी को नगर से निकाल देने को वे तैयार हो गये। जब नगरवासियों को ये बातें मालूम हुईं तब वे पहले भी से ज्यादह उस व्यापारी से मेल करने लगे।

३

व्यापारी ने अपने वादे पूरे किये। जिन जिन कामों के लिये जितने रुपये देने का वादा किया था वह सब दे दिया। लेकिन अपनी दवा का दाम फ़ी बोतल एक आने के हिसाब से बढ़ा दिया। इस से जो ज्यादह आमदनी हुई वह उपर्युक्त दान के बराबर हुई। इसलिये उसके लाभ में एक पाई भी कम नहीं हुई।

राजा के दरबार में जादूगर को बड़ा ऊँचा स्थान मिला। सब तरह के आदर सम्मान राजा के बाद उसी को मिलने लगे। राव बहादुर, दिवान बहादुर आदि आदि उपाधियां मिलीं। उसकी दूकानों की रखवाली पुलीस के सिपाही करने लगे। हुक्म जारी हुआ कि नगर का कोई आदमी उस व्यापारी के ख़िलाफ़ कुछ न बोले। राज-द्रोह के बाद यही बड़ा अपराध माना गया।

लेकिन माधवपुर के बुद्धिमानों को पहले से ज्यादह चिन्ता होने लगी। "हाय! यह क्या हुआ? हम तो गये कुँआ खोदने और उसमें से निकला भूत! अब तो नगर बरबाद हो रहा है। सारी प्रजा मरती जा रही है।" लेकिन उनकी बातों को सुननेवाला कौन?

इस तरह सात आठ साल बीते। धन-धान से भरा वह नगर

गरीबी से दबे जाने लगा। रोग फैले। अस्पतालों में रोगियों की भीड़ होने लगी। वह ज़माना गया जब सब लोग मेहनत करके पैसे कमाते थे। सड़कों पर भिखारियों की संख्या बढ़ गयी; उनको भीख देनेवाले भी कम होते गये। चोरी, खून, दंगा आदि गुनाह भी खूब बढ़े। जहां एक कैदखाना था तहां अस्सी हुए। कोने कोने में पागलखाने खोले गये। बच्चे भूख के मारे और रोग के वश होकर सूखने लगे। माताएँ रोने लगीं। हर कहीं रोने की आवाज़ से दिशाएँ गूँज उठीं।

लेकिन उस व्यापारी को किसी बात की कमी न रही। उस की दौलत दिन पर दिन बढ़ती गयी। हर साल वह एक नया मकान बनवाने लगा। वह बड़े ठाठ से रहता था। वह प्रति मास काफ़ी धन अपने घर भेजता था। राजा को, उसके मंत्रियों को और उसके अन्य कर्मचारियों को अपने काबू में रखता था। वह हर साल मोटा भी होता गया।

माधवपुर के बुद्धिमानों में एक महात्मा थे। उन्होंने देखा कि नगर पर भारी संकट आ पड़ा है। उन्हें मालूम हुआ कि कुछ समय तक और चुप रहने से नगर एक दम मिट्टी में मिल जायगा। फ़ौरन ही उन्होंने एक बड़ी महासभा बुलायी। उस व्यापारी के फंदे में पड़े हुए लोग भी उस सभा में काफ़ी तादाद में उपस्थित हुए। वह महापुरुष राजा के क्रोध की तनिक भी चिन्ता नहीं करते थे। उन्होंने उस व्यापारी के सभी रहस्यों को खोल दिया।

पहले उन्होंने याद दिलाया कि माधवपुर दस साल पहले कैसा संपन्न था और प्रजा कैसे सुखी थी। फिर उस समय की शोकजनक स्थिति का वर्णन किया। उन्होंने कहा—"इन सब का क्या कारण

है? इनका कारण वही व्यापारी है। जब से वह इस गांव में आया है तब से हमारे ऊपर शनि का क्रोध सवार हो गया है। हम उस व्यापारी के जाल में फँसे हुए हैं। इसलिये सच्ची बातें हमें नहीं मालूम होतीं। अब ज़रा सोच कर तो देखिये। घरों में तो आप के बाल बच्चे भूखों मरते हैं और शाम हुई नहीं कि आप उसकी दूकान की ओर दौड़ते हैं। क्या कोई समझदार आदमी कभी ऐसा करेगा?

"आप लोग समझते हैं कि वह राजा को धन देता है, पाठशालाओं की मदद करता है और औषधालयों के लिये चंदा देता है। लेकिन यह सारा धन वह कहाँ से लाता है? क्या अपने घर से लाता है? वह तो जब यहाँ आया खाली हाथ आया था। उसके पास एक पाई भी नहीं थी। यह सब आप ही का धन है। आप लोगों को नशे में चूर करके आप के धन को लूटता है और उसका एक छोटा हिस्सा सार्वजनिक कार्यों में खर्च करता है। इस खर्चे को क्या हम आप नहीं उठा सकते? क्या हमारे इस नगर में उसके आने के पहले सार्वजनिक खर्च नहीं होता था?

"आप लोग तो उससे मिलनेवाले धनका ही ख्याल करते हैं। उसके कारण जो खर्च बढ़ गया क्या आपको उसका ख्याल है? जहाँ एक कैदखाना था तहाँ अब नौ कैदखाने हैं। एक नया पागलखाना खुल गया है। और आमदनी कितनी कम हो गयी है? इसकी दवा खाकर लोग कमज़ोर और आलसी बन गये हैं। उससे कला कौशल का नाश होता जा रहा है। जहाँ दस रूपये मिलते थे वहाँ आज तीन रूपये मिलते हैं।

"जब से वह इस गांव में आया है तब से रोग फैले। अन्याय बढ़ा। हमारी अच्छी आदतें छूट गयीं। भाइयो! अगर और कुछ दिन

ऐसे ही हम रहें तो हमारा सत्यानाश हो जायगा। इसी क्षण उस पापी को इस नगर से भगाना चाहिये। नहीं तो हम बच नहीं सकते।"

उस महापुरुष की इन बातों को सुनकर लोगों की आंखें खुलीं। उन्हें मालूम हुआ कि उनकी सारी कठिनाइयों का कारण वह व्यापारी ही है। तुरन्त सब लोग एक साथ निकले और उस व्यापारी के घर जाकर उसे भगाने लगे। वह घर के पिछवाड़े से भाग कर राजा के आश्रय में गया। राजा को मालूम हो गया कि उसका पक्ष लेने से अपने ऊपर संकट आ पड़ेगा। इसलिये उन्होंने कहा—"मुझसे कुछ नहीं हो सकता। तुम यहाँ मत ठहरो। जाओ, भागो, अपने को बचाओ।" दूसरा कोई मार्ग न देख कर जादूगर उस नगर को छोड़ कर भाग गया। तब तक उनकी दूकानों की रखवाली करनेवाले पुलीस के सिपाही भी जनता के साथ मिल कर उसे भगाने लगे। लोग नगर से बहुत दूर उसे भगाकर लौटे।

फिर माधवपुर पहले की तरह सुसंपन्न हुआ। उस महापुरुष की प्रशंसा सारी प्रजा करने लगी। उन्हीं के कारण तो उन्हें सत्य का ज्ञान हुआ।

पाठको! क्या आपको मालूम है कि वह जादूगर कौन है? वह शराब है। अब वह हमारे भारत वर्ष में अपनी जादू की दवा बेच रहा है। क्या आप लोग भी माधवपुरवासियों की तरह उसे मार भगाने के लिये आगे बढ़ेंगे?

मधुसार

(कुछ ब्यौरे)

मधुसार पानी के समान एक द्रव है। उसमें एक तरह की बू रहती है। वह द्रव होने पर भी प्यास को नहीं बुझा सकता। गुण में पानी के ठीक विरुद्ध है। यही कारण है कि मदिरा, ब्रान्दी, ह्विस्की आदि में आग जल्दी लग जाती है। खाली मधुसार को अर्थात् पानी न मिला हुआ मधुसार नहीं पिया जा सकता। अगर कोई पिये तो गला जल जायगा।

*   *   *

ताड़ी और बिअर में मधुसार कम है। वाइन में उससे ज़रा ज्यादा है। मदिरा, जिन, रम, ब्रान्दी, ह्विस्की–इन सब में मधुसार और भी ज्यादा है। बिअर में ४ सैकड़े से ७ सैकड़े तक है। ताड़ी में ८ से १२ सैकड़े तक है। वाइन और टानिक कहलानेवाले औषधों में १५ से २५ सैकड़े तक है। मदिरा में ४० सैकड़ा है। जिन, रम, ब्रान्दी, ह्विस्की इनमें ५० सैकड़े तक मधुसार है।

*   *   *

मद्यपान की बुराई उससे पैदा होनेवाला नशा भी है। इसका कारण उसमें रहनेवाला मधुसार ही है। मनुष्य में पहचानने की शक्ति, ज्ञान, स्मरण शक्ति, विवेक, शरीर के अवयवों को चलाने की शक्ति आदि इन सब का मूल स्थान दिमाग है। नशा उस स्थिति का नाम है जब दिमाग अपनी प्राकृतिक परिस्थिति को खो कर अपने नियत कामों को करने की शक्ति न रहने से गड़बड़ी में पड़ जाता है। कोई चाहे

मूर्ख हो पर उसका दिमाग अपने प्राकृतिक नियम से काम करता रहेगा। लेकिन कोई कैसा भी बुद्धिमान हो, वह नशे में आकर आगे पीछे न सोच कर हल्ला मचावेगा। साधारण कल भी ठीक ठीक रहने पर, अपना काम करता जायगा। लेकिन कीमती कल भी पहियों के बिगड़ जाने पर कुछ काम नहीं कर सकेगा।

* * *

मधुसार एक तरह का विष है। यह रक्त में मिल जाता है और दिमाग तक पहुँचता है। वहां जो सूक्ष्म नस, शरीर को चलानेवाली विद्युच्छक्ति, विवेक नाम की दैवी शक्ति हैं उन सब को वह बिगाड़ डालता है। यही कारण है कि मधुसार विष का जितना अंश अंदर जाता है उतना ही मनुष्यों के विचार, वचन और कार्य बदल जाते हैं। लेकिन उसकी दैवी शक्ति पूरी तरह नहीं मिटती। यह दैवी शक्ति मधुसार के विष से लड़ती है और फिर से दिमाग को ठीक रास्ते पर लाती है। यही कारण है कि नशा छूटता है। लेकिन वह शक्ति भी कब तक उस विष का सामना करती रहे? धीरे धीरे इस शक्ति का बल कम हो जाता है। फिर मधुसार सख्त बीमारियां पैदा करने लगता है।

* * *

संसार की सभी मीठी चीज़ों से शराब बन सकता है। अंगूर, ईख का रस, ताड़ और नारियल के पेड़ का रस, गुड मिला हुआ पानी आदि सब से शराब बनाया जा सकता है। धान आदि को भी भिगोकर एक तरह का शराब बनाते हैं। इसका मतलब यही है कि अच्छी भोज्य वस्तुओं को विष बनाना है, जैसे मकान गिरा कर उसकी लकड़ियों से चूल्हा जलाना।

* * *

मधुसार में ऐसा भी एक गुण है जिससे वह पानी में जल्दी मिल जाता है। इसलिये शरीर के अंदर जो गीलापन है उसे वह जल्दी खींच लेता है।

इसी तरह भात आदि भोज्य वस्तुओं के गीलेपन को भी खींचकर उन्हें सुखा डालता है। यही कारण है कि पियक्कड़ को प्यास ज्यादह लगती है।

* * *

ताड़ी, मदिरा, ब्रान्दी, ह्विस्की आदि सब तरह का मद्यपान नसों को कमज़ोर बना डालता है। लोग जो समझते हैं कि इनके पीने से ताक़त बढ़ती है वह गलत है। पीने पर तुरन्त मालूम पड़नेवाला जोश झूठा होता है। वह ताकत का चिह्न नहीं है। मन में पैदा होनेवाले विचारों, बातों और आचरणों को काबू में रखकर उन्हें चलानेवाली शक्ति बुद्धि है। मधुसार का विष पहले इस बुद्धि पर आक्रमण करता है। मालिक जो घर में न रहे तो नौकर खेलने कूदने लगते हैं, इसी तरह शराब पीकर मधुसार के विष के कारण मनुष्य जब कोई काम करने लायक़ नहीं रह जाता है तब बुद्धि के नौकर नस आदि कायदे को भूलकर गडबड़ मचाने लगते हैं। इसी को भूल से लोग जोश समझते हैं। धीरे धीरे ज्यों ज्यों विष बढ़ता है त्यों त्यों नसों का बल कम होता जाता है।

* * *

शरीर में दो तरह की गरमी है। एक बाहरी है और दूसरी भीतरी। भीतरी गरमी हमेशा एक सी रहती है। शरीर की तन्दुरुस्ती के लिये उसका वैसा रहना आवश्यक है। बाहरी गरमी ज़रा घटती, बढ़ती है। हमारे शरीर में गरमी पैदा करनेवाली एक आग है। उसी को कायम रखने के लिये हम भोजन करते हैं। उसको काबू में रखकर चलाने वाला मालिक दिमाग़ है। जैसे स्त्री चूल्हे का ख्याल रखती है वैसे ही दिमाग की आंतडियां इस बात का ख्याल रखती हैं कि शरीर की आग़ बुझे नहीं, या एक दम भभक न उठे। इसी से निकलकर हज़ारों नस शरीर भरमें फैल हैं। यही सब शरीर की गरमी की रखवाली करते हैं।

* * *

मधुसार आंतड़ियों को सताता है। यही कारण है पीने पर तुरन्त मालूम पड़ता है कि शरीर के अंदर की गरमी बढ़ गयी। अर्थात् अंदर का चूल्हा खूब ज़ोर से जलता है और गरमी बाहर निकली है। तब मालूम पड़ता है कि सरदी चली गयी और गरमी आ गयी। लेकिन यह धोखा है। सच तो यह है कि भीतरी गरमी कम हो गयी और बाहरी गरमी बढ़ी।

* * *

एक बर्तन में चावल पकाकर उतार देते हैं तो ऊपर से भात ठण्डा होता जाता है और नीचे का भाग गरम रहता है। एक चमचे से जो हिलाओ तो सब जगह एक सी गरमी मिलेगी। क्या इससे समझा जाय कि गरमी नयी पैदा हो गयी? जो तुम बार बार हिलाते रहो तो सारा भात ठण्डा हो जायगा। मद्यपान से होनेवाली गरमी इसी तरह की है। मद्यपान से उत्पन्न होनेवाले दिखौआ जोश के समान यह भी धोखा ही है। इसलिये सरदी से बचने के लिये मद्यपान करने का यही फल होता है कि भीतरी गरमी कम हो जाती है और हम कई तरह की सख्त बीमारियों में फँस जाते हैं।

* * *

मधुसार कुछ उपयोगी भी है। कई कलों में इसका उपयोग कर अच्छा काम निकाला जा सकता है। रसायनिक कामों के लिये यह बड़े काम की है। लेकिन उसको शरीर के अंदर भेजकर बुद्धि और तन्दुरुस्ती को खराब कर डालना बड़ी मूर्खता है।